



वार्षिक पत्रिका (13 वाँ अंक, वर्ष 2023)

प्रयास



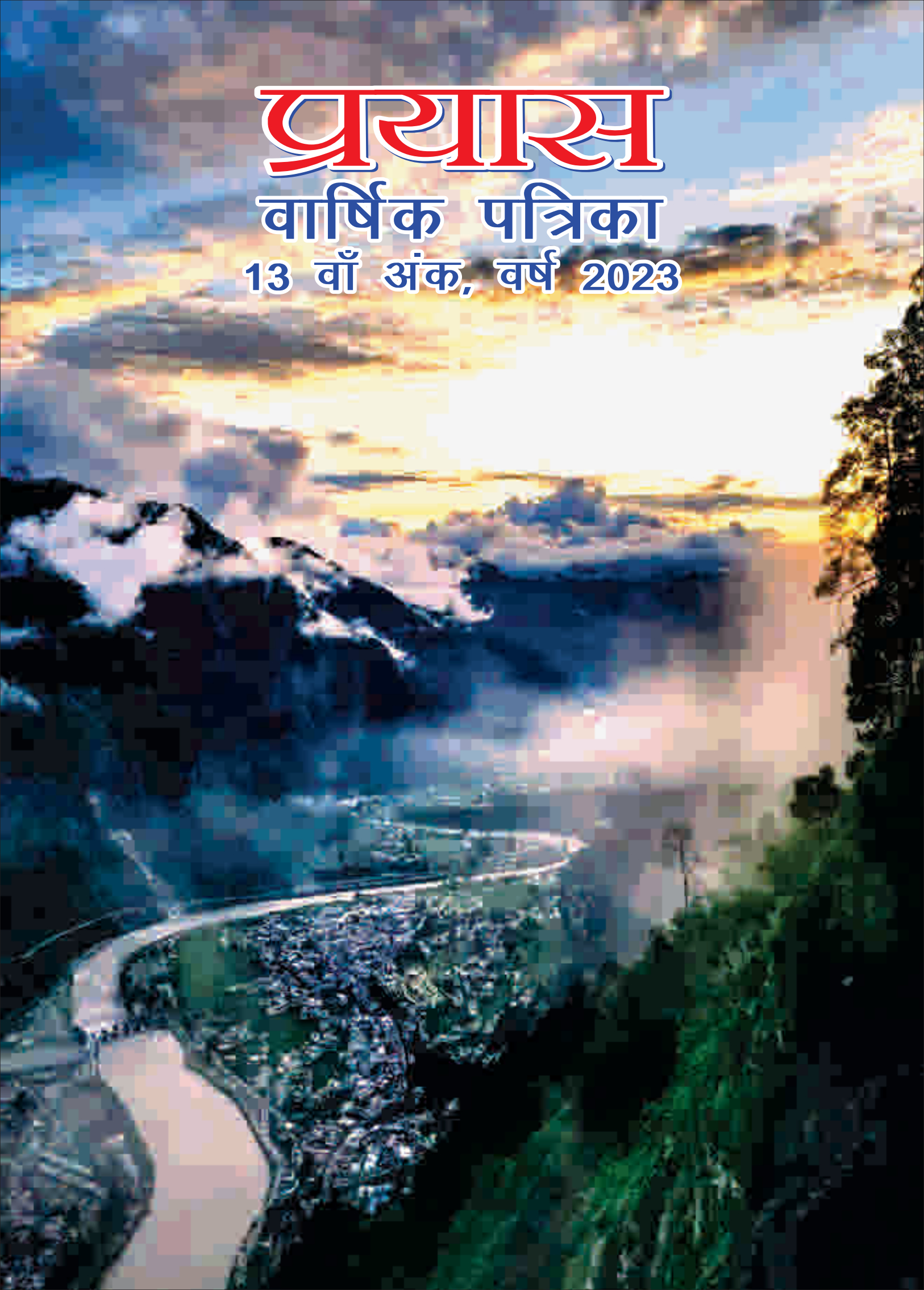
SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड, देहरादून



प्रयास

वार्षिक पत्रिका
13 वाँ अंक, वर्ष 2023







हिंदी दिवस 2023

के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश



राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

हिंदी दिवस 2023 के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी का संदेश

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

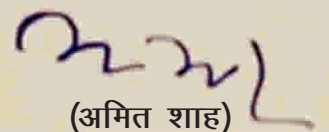
भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम 'हिंदी' है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ-साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है। हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं। किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि विद्यापति की शब्दावली में कहूँ तो 'देसिल बयना सब जन मिट्टा' यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक

तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके। सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन-जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में 'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन' के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण किया गया है। राजभाषा विभाग की एक नई पहल 'हिंदी शब्द सिंधु' शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने 'लीला हिंदी प्रवाह' मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा-भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी-अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं। भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार ई-मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली



(अमित शाह)

14 सितंबर, 2023 (अमित शाह)



संविधान भवन



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून

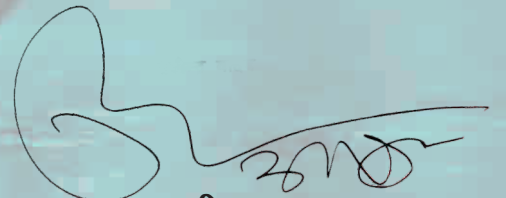


संदेश

हिंदी भाषा के संवर्धन की दिशा में किए जा रहे विभिन्न प्रयासों के क्रम में कार्यालय की वार्षिक पत्रिका “प्रयास” के 13 वें अंक का प्रकाशन हर्षदायी है। राजभाषा हिंदी के प्रचार—प्रसार में कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिकाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके माध्यम से ही विभागीय प्रतिभाएँ सामने आती हैं तथा सकारात्मक वातावरण तैयार होता है। इसके साथ—साथ कार्यालय की प्रत्येक गतिविधि का विवरण भी इन पत्रिकाओं के माध्यम से पूरे देश में प्रेषित हो जाता है। “प्रयास पत्रिका” इस महत्वपूर्ण कार्य में निर्बाध योगदान कई विगत वर्षों से देती आ रही है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि “प्रयास पत्रिका” का यह नवीन अंक भी अपने पूर्व अंकों की भांति कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ—साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार—प्रसार में एवं इसके प्रति अभिरुचि और जागरूकता का वातावरण बनाने में प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

पत्रिका के सफल एवं निरंतर प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।



प्रवीन्द्र यादव

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून



संदेश

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका का 13वाँ अंक आपके कर कमलों में अर्पित करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। राजभाषा हिंदी को समर्पित हमारी पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगी। भारत के संविधान के अनुसार हिंदी को संघ की राजभाषा का सम्मानित दर्जा प्राप्त है। संविधान के अनुसार हिंदी भाषा का प्रचार एवं विकास करने का दायित्व भारत सरकार पर है। इसी दायित्व के निर्वहन में हमारे कार्यालय का एक छोटा-सा "प्रयास" पत्रिका का प्रकाशन है।

पत्रिका के रचनाशिल्पी परिवार में बढ़ोतरी इस बात को सिद्ध करती है कि पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार को गति प्रदान करने के प्रयास में सफल रही है। हम सब इस बात से भली-भाँति परिचित हैं कि हिंदी भाषा अपनी पहचान पूरे विश्व में स्थापित कर चुकी है। अब हम भारतवासियों का कर्तव्य है कि हम इसे बल प्रदान करें। इस अंक के प्रकाशन में रचनाकारों, समीक्षा समिति के सदस्यों तथा संपादक मंडल का योगदान प्रशंसनीय है, इसके लिए सभी बधाई के पात्र हैं।

योगेश अग्रवाल
वरिष्ठ उपमहालेखाकार
ए.एम.जी.-II

उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून



संदेश

हमारे कार्यालय की वार्षिक पत्रिका "प्रयास", इसके नाम के अनुरूप हिंदी के प्रति कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के राजभाषा हिंदी के प्रति अभिरुचि को बढ़ावा देने के प्रति निरंतर किए जाने वाले प्रयास का परिणाम दर्शाता है। चूँकि भाषा एक राष्ट्र की संस्कृति एवं परंपरा की परिचायक होती है, अतः हिंदी भाषा की प्रगति वास्तविकता में सम्पूर्ण राष्ट्र की प्रगति है। हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका "प्रयास" ने निसंदेह कार्यालय में हिंदी भाषा के प्रयोग में वृद्धि एवं हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने में अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कार्यालय में विभिन्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पत्रिका में प्रकाशन हेतु रचनाएँ देने के प्रति उत्सुकता, उनकी बढ़ती रचनात्मकता एवं हिंदी के प्रति उनके रुझान को दर्शाती है जिसका स्पष्ट प्रमाण पत्रिका में योगदान देने वाले रचनाकारों की प्रति वर्ष निरंतर बढ़ती संख्या है।

पत्रिका "प्रयास" के अनवरत प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकमनाएँ।

मुकेश कुमार

मुकेश कुमार
उपमहालेखाकार (प्रशासन)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
उत्तराखण्ड, देहरादून



संपादकीय...



कार्यालय की गृहपत्रिका 'प्रयास' के 13वें अंक के प्रकाशन के माध्यम से एक ऐसे सार्थक वातावरण की संरचना होती है, जहाँ रचनात्मक प्रतिभाओं को सामने आने का अवसर प्राप्त होता है। राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास एवं प्रयोग में वृद्धि के लिए यह एक सराहनीय कदम है। हमारे देश की सांस्कृतिक विविधता में एकता का सूत्र राजभाषा हिंदी है। हिंदी को बढ़ावा देने एवं इसकी सरलता से सभी को परिचित कराने की दिशा में हमारे कार्यालय की 'प्रयास' पत्रिका का 13 वाँ अंक आपके सामने है।

आशा है कि यह पत्रिका इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मकता का दर्पण बनेगी और सभी को राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित करेगी। अतः 'प्रयास' पत्रिका के प्रकाशन से, प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

दी. कुवर्जा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी अनुभाग

पत्रिका परिवार

संरक्षक	:	श्री प्रवीन्द्र यादव, प्रधान महालेखाकार
प्रधान संपादक	:	श्री मुकेश कुमार, उप महालेखाकार
संपादक	:	श्री विभाष चन्द्र मुखर्जी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
उपसंपादक	:	श्री विवेक केशला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
परामर्शदाता एवं संपादन सहयोग	:	श्री दिलीप कुमार, सुश्री तमन्ना, श्रीमती रेशू चौधरी एवं श्री प्रवीन कुमार
मुख्य पृष्ठ	:	फूलों की घाटी, चमोली (उत्तराखण्ड)
पार्श्व पृष्ठ	:	उत्तराखंड में स्थित पर्यटन स्थल देवप्रयाग का दृश्य।

File No. हिन्दी/साओविचि/25/2021-22 (Computer No. 55848)
624768/2022/DAK (AG-AUDIT)-UTTARAKHAND



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.



सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2022-23/११ पृ.
दिनांक: 07-12-2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखंड,
देहरादून - 248 195

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "प्रयास" के 12 वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका "प्रयास" के 12 वें अंक की ई-प्रति प्राप्ति हुई है।
सहृदय धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं जानकारीपूर्ण हैं। पत्रिका
में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बंधी हो खुलकरती से प्रयोग
किया है, इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में बाल लेखकों द्वारा लिखी गई
रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं, जिसके लिए वे विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं और
भविष्य के लिए उन्हें शुभकामनाएं। कार्यालय की ओर से विभिन्न खेल प्रतिस्पर्धाओं में भाग
लेने वाले और पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को भी बहुत-बहुत बधाई। पत्रिका में कार्यालयी
कृतकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर वैयक्तिक योग्यता को
कार्यालय का चिन्ह और अंतिम पृष्ठ पर टिहरी बाघ का चित्र बहुत ही सुंदर है जो पत्रिका की
सुंदरता में वृद्धि करते हैं एवं पत्रिका को आकर्षक बनाते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है।
पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ
पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

HINDI
cell

भवदीय,

(वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी)



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पंजाब एवं यू.टी.,
चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
(A&E) PUNJAB & U.T., CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-27002174; फैक्स 0172-2703110
क्रमांक:- हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2022-23/Sot
दिनांक:-14-11-2022

सेवा में

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
महालेखाकार भवन, कोलागढ़,
देहरादून, उत्तराखण्ड - 248195

विषय: विभागीय पत्रिका "प्रयास" के बारहवें अंक की पावती।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "प्रयास" का बारहवां अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में
प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक, भावपूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है।
कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

श्री चौदवीर की "यह मेरा शहर है साहब", सुश्री उर्मिला लिंगवाल की "सफ़र में हूँ, मुकमल सा,
कुछ अधूरा सा", श्री सुबोध नागर की "विट्ठिली", सुश्री रुचि रानी की "घर से दूर जब रहने लगे" एवं श्री
मोहित सेठ की "अटल कवि" रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुविपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई। पत्रिका की
उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

हिंदी अधिकारी

Hindi cell



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL) CHENNAI



सं.प्रतिभाव/हिंदी अनुभाग/14-02/2022-23/129

दिनांक: 18.11.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिंदी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
उत्तराखण्ड,
देहरादून - 248 195

विषय : कार्यालयीन हिंदी वार्षिक पत्रिका "प्रयास" के 12वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "प्रयास" के 12वें अंक की प्राप्ति इस कार्यालय में
ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं संटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय, रोचक, जानकारीपूर्ण एवं
रोचक हैं। सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं विशेषतः श्री जगन सिंह कुल "अग्निवीर", श्रीमती मधुदेवी कुल "नेता
मेरे देश के (एक व्यंग्य)" एवं श्रीमती रेणु चौधरी कुल "लक्ष्य" अत्यंत प्रशंसनीय एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

प्र. महालेखाकार
30.10.2022

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर 440001

संख्या.राजमार्ग 8(II)/2022-23/जा.क.
दिनांक: 13/11/2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
उत्तराखण्ड, देहरादून
विषय : हिंदी पत्रिका "प्रयास" के 12 वें अंक पर प्रतिभाव प्रेषण।

महोदय/महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "प्रयास" के 12 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहृदय धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं जानकारीपूर्ण हैं। विशेषकर श्री लेखान,
लेखापरीक्षा का लेख "समय प्रबंधन", श्री अमन सिंह, सं.ले.प.अ. की रचना "अग्निवीर" तथा श्री अश्विनी
कुमार पाण्डेय, सं.ले.प.अ. की रचना "नया दौर" उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ
अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई
एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

WASIM MINHAS, HO(AMG-II) HINDI CELL-WM, HINDI CELL
हिंदी अधिकारी

प्र. महालेखाकार
30.10.2022

हिन्दी कक्षा/हिन्दी गृह पत्रिका रिज्यू 37276/41 दिनांक 15/11/2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा),
उत्तराखण्ड, देहरादून, कौलागढ़

To,
Senior Audit Officer (Hindi)
Office of the Principal Accountant General
(Audit) Uttarakhand Dehradun
Kaulaghar

विषय: आपकी हिन्दी गृह पत्रिका "प्रयास" का 12वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "प्रयास" का 12 वें अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं। इस अंक में प्रकाशित श्री अमर सिंह द्वारा लिखित कविता "अग्निवीर", श्री कुलदीप कुमार द्वारा लिखित "आधुनिक एवं आध्यात्मिक जीवन में योग का महत्व", श्री विवेक केशवा द्वारा लिखित "प्लास्टिक पर्यावरण पर संकट", सुश्री मधु देवी द्वारा लिखित कविता "मेरा देश के" और सुश्री उर्मिला लिंगवाल द्वारा लिखित "सफर में हूँ, मुकम्मल सा, कुछ अधूरा सा" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक संघ प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रयास है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

प्रधान महालेखाकार
(एम सुधाकरन)

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी)

HN 276/41



प्रधान महालेखाकार (ले एवं हक) हरियाणा का कार्यालय
लेखा सदन, प्लॉट नं० 4 व 5, सैक्टर 33-बी, चण्डीगढ़-160020
टेलीफोन नं० 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं० 0172-2603824
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B,
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.: 0172-2603824
E mail - agaharyana@cag.gov.in

हिन्दी/कक्षा/पत्रिका/2022-23/244
दिनांक: 14.12.2022

सेवा में

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (हि.क.),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड,
देहरादून।

महोदय,

विषय : कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "प्रयास" के 12वें अंक के सम्बन्ध में।

आपके कार्यालय के पात्र दिनांक 07.11.2022 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित कार्यालय की पत्रिका "प्रयास" के 12वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री नेवपाल का लेख "समय प्रबंधन", श्री अशोक कुमार का लेख "मानसिक रोग एवं स्वास्थ्य" सुश्री अश्वनी कुमारी का लेख "बच्चों के व्यवहार पर माता-पिता का प्रभाव" एवं श्री दिलीप कुमार का लेख "जीवन का टॉनिक", दोस्त बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है।

इसके अतिरिक्त श्री मोहित सेठ की कविता "अटल कावे", श्री गंगावीर सिंह की कविता "मातृभाषा हिन्दी" एवं श्री अश्वनी कुमार पांडेय की कविता "नया दौर" पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ सफल होने से संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

Pragya Admin

भवदीय

प्रधान महालेखाकार
हिन्दी अधिकारी

ई-मेल द्वारा

भारत सरकार
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार, (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003



Government of India
Indian Audit and Accounts Department
Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh, Shimla-171003

संख्या हि.क./वार्ड/पत्रिका/2022-23/645

दिनांक-25.11.2022

सेवा में

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
उत्तराखण्ड, देहरादून।

विषय:- वार्षिक हिन्दी पत्रिका "प्रयास" के 12वें संस्करण की ई-प्रति की पावती के सम्बन्ध में।

महोदय/महोदय,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "प्रयास" के 12वां संस्करण की ई-प्रति प्राप्त हुई। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिन्दी कक्षा)

Sankar/Hindi



संख्या: 10/12/2022

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017 (ओडिशा)



दिनांक- 26.12.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिन्दी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड,
महालेखाकार भवन, कौलागढ़,
देहरादून - 248195
ईमेल- agauuttarakhand@cag.gov.in

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "प्रयास" के 12वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी गृह पत्रिका "प्रयास" का 12वां अंक प्राप्त हुआ, एतद्वारा धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व संपर्क अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री कमलकान्त पाण्डेय	पुंगला- यात्रा संस्मरण
2.	श्री चांदीर	यह मेरा शहर है साहब
3.	श्री प्रवीण कुमार	हमारी जिंदगी की नाय
4.	श्री सुदीप नागर	चिट्ठियाँ
5.	श्री अशोक कुमार	मानसिक रोग एवं स्वास्थ्य

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(कीर्ति श्री)
हिन्दी अधिकारी

संख्या सं.-0674-2303511 ई-मेल- pda@eeoast@cag.gov.in / rajphasha.pda@gmail.com

2

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचनायें	लेखक	पृष्ठ संख्या
1-	ए०आइ० को विनियमित करने की आवश्यकता क्यों है?	श्री धर्मपाल सिंह	16
2-	आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथिक औषधियों की मानव जीवन में उपयोगिता	श्री जी०के० बत्रा	17
3-	हिंदी प्रेम (व्यंग)	श्री सुनीत जौहरी	18
4-	संदेह	श्री अरिंदम चटर्जी	19
5-	अनुवाद में तकनीक का योगदान	श्री विवेक केशला	20
6-	स्त्री भी छू सकती है	श्रीमती पूनम जायसवाल, पत्नी (श्री मनोज जायसवाल)	21
7-	अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा हिंदी	श्री मधुकर मिश्रा	22
8-	आनंदमय जीवन जीने की कला	श्री नेत्रपाल	23
9-	भारत सरकार की राजभाषा नीति और राजभाषा के प्रति हमारा दायित्व	श्री दिलीप कुमार	24
10-	सफलता हेतु सही सोच के साथ सही दृष्टिकोण की आवश्यकता	श्री अशोक कुमार	25
11-	प्रतिरोधशीलता और चरित्र	श्री अमित सिंह, भाई (सुश्री तमन्ना)	26
12-	ए०जी० ऑफिस	श्री गुलाब सिंह	27
13-	गाँव बेचकर शहर खरीदा	श्री प्रवीन मैथनी	28,29,30
14-	जीवन और संगीत	श्री नरेंद्र लाल	31
15-	जीवन साथी	श्रीमती अनिता, पत्नी (श्री गुलाब सिंह)	32
16-	मनुष्य की भूख	श्री अरुण यादव	33
17-	हार नहीं स्वीकार	श्री कमलकान्त पाण्डेय	34
18-	कृष्णांजली	श्रीमती वैजयन्ती, माता (श्री कमलकान्त पाण्डेय)	35

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचनाये	लेखक	पृष्ठ संख्या
19-	मौजूदा सामाजिक परिदृश्य : स्त्री शक्ति की उच्चता	सुश्री तमन्ना	19
20-	साँसे	श्री गोपाल दत्त	
21-	हमारी घरती	अराध्या मिश्रा, सुपुत्री (श्री मधुकर मिश्रा	
22-	हरिद्वार (देव भूमि के दर्शन)	श्री लक्ष्मण रावत	
23-	ये कैसी तीर्थ यात्रा	श्रीमती गरिमा देओल, पत्नी (श्री संदीप चौधरी)	
24-	बिटिया	श्री कुलदीप कुमार	
25-	भारतीय भिन्नता	श्रीमती रेशू चौधरी	
26-	भाषा	श्रीमती निशा पाण्डेय	
27-	भीख और मूख	श्री विजय	
28-	दिवाली और गरीबी	श्री अश्विनी कुमार	
29-	सबला	श्री योगेश त्यागी	
30-	इंसान (एक अनोखी रचना)	श्री महावीर सिंह	



प्रधान महालेखाकार, श्री प्रवीन्द्र यादव दीप प्रज्ज्वलित कर
हिन्दी पखवाड़ा – सितंबर 2023 का शुभारंभ करते हुए।



“हिंदी पखवाड़ा”, सितंबर – 2023 के उद्घाटन समारोह में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



हिंदी पखवाड़ा, सितंबर – 2023 के उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित हिन्दी अनुभाग के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



हिंदी पखवाड़ा – सितंबर – 2023 के उद्घाटन के अवसर पर माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी का संदेश पढ़ते हुए उपमहालेखाकार (प्रशासन), श्री मुकेश कुमार।



हिंदी पखवाड़ा – सितंबर – 2023 के उद्घाटन के दौरान उपस्थित महिला अधिकारियों एवं कर्मचारियों का समूह



स्वतंत्रता दिवस – 2023 के अवसर पर पूजनीय महात्मा गाँधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए प्रधान महालेखाकार, श्री प्रवीन्द्र यादव



स्वतंत्रता दिवस – 2023 के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लेते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

ए०आई० को विनियमित (Regulate) करने की आवश्यकता क्यों है ?

श्री धर्मपाल सिंह
सचिव, प्रधान महालेखाकार



ए०आई० (Artificial Intelligence) प्रौद्योगिकी का विकास आधुनिक समय का एक बड़ा मील का पत्थर है जो मानवता के लिए विशाल संभावनाएं खोलता है। ए०आई० ने विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी प्रगति की है, जैसे कि स्वचालित गाड़ियों, रोबोटिक्स, सेवा उद्योग, संगणक विज्ञान, चिकित्सा और शिक्षा इत्यादि। हालांकि, इस तकनीक के तेजी से विकास के साथ, इसके नैतिकता, सुरक्षा और व्यक्तिगत गोपनीयता संबंधी मुद्दे भी उभर रहे हैं। इसके साथ ही, ए०आई० के उपयोग में होने वाले तकनीकी और सामाजिक बाधाएं भी हैं। इसलिए, ए०आई० को विनियमित करने की आवश्यकता प्रतीत होने लगी है।

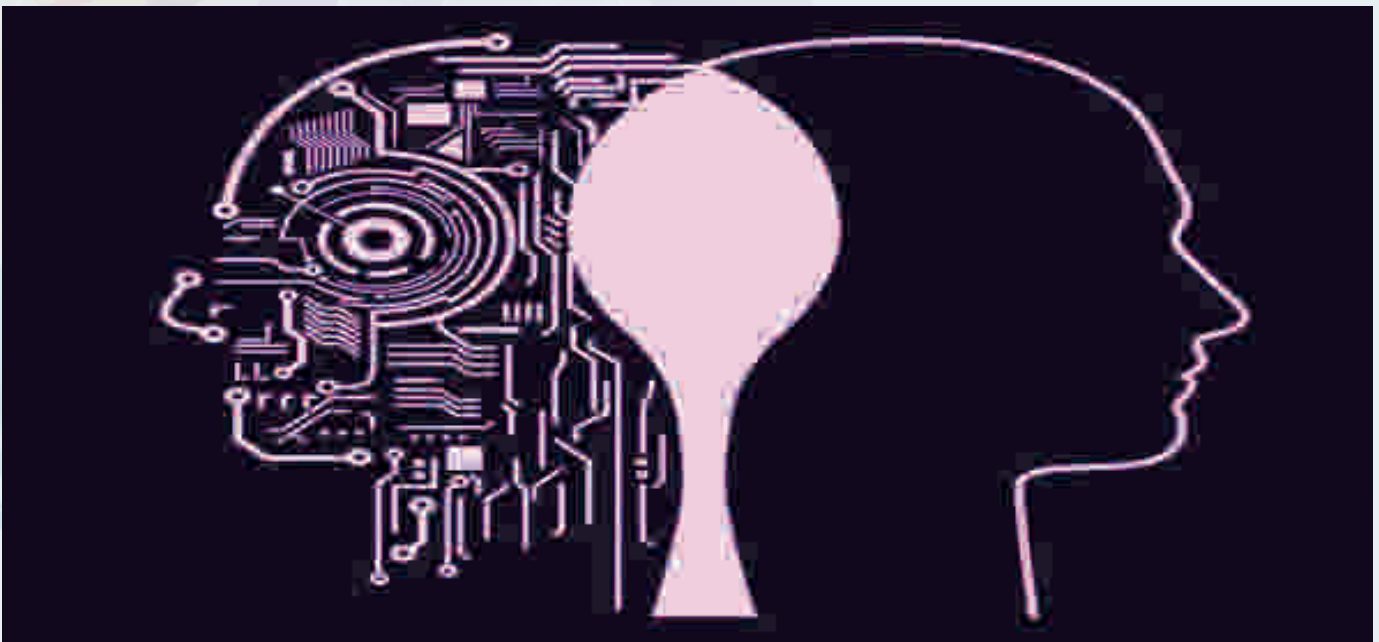
ए०आई० के नियंत्रण की आवश्यकता:

1. दुर्घटना की संभावना: ए०आई० सिस्टम बहुत तेजी से विकसित हो रहे हैं।, लेकिन इन्हें पूरी तरह से नियंत्रित करने की क्षमता अभी तक मानव इंटरवेंशन के स्तर पर नहीं है। इसलिए, ए०आई० के गलत निर्णय या नियंत्रण न होने से दुर्घटनाएं हो सकती हैं। यह खतरा विशेष रूप से स्वचालित गाड़ियों और रोबोटिक्स के उपयोग में बढ़ जाता है। एक सावधान और नियमित प्रक्रिया के माध्यम से, इस तकनीक के उपयोग को सुरक्षित बनाने की जरूरत है।
2. दायित्व और नैतिकता: ए०आई० द्वारा लिया जाने वाला निर्णय स्वतंत्र रूप से लिया जा सकता है, जो संबंधित नैतिक मूल्यों पर सवाल उठा सकता है। उदाहरण के लिए, स्वचालित गाड़ियों को युद्ध क्षेत्रों में उपयोग करने से युद्ध के समय विवेक हीनता को बढ़ावा मिल सकता है। ए०आई० सिस्टम को नियंत्रित करके और नैतिकता के प्राचीन मूल्यों को साथ रखकर सुनिश्चित किया जा सकता है कि ये समाज के हित में ही काम करते हैं।
3. रोजगार के संबंध में चुनौतियां: पूरी दुनिया में टेक्नोलॉजी की दृष्टि से दो बड़े स्तरों पर काम हो रहा है— कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानि और इंटरनेट ऑफ थिंग्स, इसमें ए०आई० AI अधिक चर्चा में है विभिन्न क्षेत्रों में AI का प्रयोग बढ़ रहा है। शिक्षा, व्यापार एवं विनिर्माण से संबंधित क्षेत्रों में AI का उपयोग व्यापक रूप से हो रहा है। संभावना यह भी जताई जा रही है की भविष्य में AI के द्वारा उन सभी कार्यों को किया जा सकेगा जो एक इंसान करता है आने वाले कुछ वर्षों में AI ए रोजगार के सामने कड़ी चुनौती पेश करेगा। ए०आई० के विकास के कारण कुछ पेशेवर क्षेत्रों के लिए नौकरियों की गिनती कम हो सकती हैं और यह चुनौती नई नीतियों के माध्यम से हल की जानी चाहिए।
4. गोपनीयता का संरक्षण: ए०आई० के उपयोग के दौरान, बड़े संख्या में डेटा और जानकारी का उपयोग होता है, जो उपयोगकर्ताओं की गोपनीयता को खतरे में डाल सकता है। डेटा संरक्षण और उपयुक्त प्राथमिकता के साथ नियंत्रित करने के लिए नियमित विधायिका की आवश्यकता है।

नियंत्रण के माध्यम से संतुलन स्थापित करना:

ए०आई० के संबंधित संदर्भ में उचित नियमित विधायिका का अभाव समस्याओं का कारण बनता है। संभवतः ए०आई० से जुड़े मुद्दों के लिए एक व्यापक और समर्थन योग्य नियंत्रण ढांचे की आवश्यकता है जो निम्नलिखित पहलुओं को शामिल करता है:

1. नीति बनाना: सरकारों और संबंधित संस्थाओं को एक व्यापक ए०आई० नीति बनाने की आवश्यकता है जो तकनीक के विकास को संज्ञेयता और नैतिकता के साथ संबोधित करती हो।
2. अनुसंधान और संस्थागत मानकों का संचालन: ए०आई० के विकास में अनुसंधान और संस्थागत मानकों को संचालित करने के लिए एक नियंत्रण नीति तय की जानी चाहिए। इससे यह सुनिश्चित होगा कि उत्पादन के लिए उचित मानकों और प्रक्रिया का अनुसरण किया जाता है।
3. सुरक्षा और गोपनीयता: सुरक्षा और गोपनीयता के लिए एक विशेष नियंत्रण नीति तय की जानी चाहिए जो उपयुक्त सुरक्षा उपायों को देखती है। डेटा सुरक्षा के संबंध में सख्त नियमों को लागू करने के लिए इस नीति को बनाया जा सकता है।
4. एआई उपयोगकर्ता के अधिकार: ए०आई० से जुड़े सभी उपयोगकर्ता के अधिकारों का सम्मान करने और संरक्षित करने के लिए एक नियंत्रण नीति बनाई जा सकती है।



निष्कर्ष:—

ए०आई० विज्ञान की अवधारणा समृद्धि का द्योतक है, जो मानव समाज को एक नई दिशा में ले जा सकता है। हालांकि, इसके उपयोग में होने वाले तकनीकी और नैतिकता संबंधी चुनौतियों के साथ संबंधित नियंत्रण और नीति बनाने की आवश्यकता है। एक विश्वसनीय, निष्पक्ष और व्यापक नियंत्रण नीति के तहत ए०आई० के उपयोग को सुरक्षित और उपयुक्त बनाने में सक्रिय भूमिका निभाना आवश्यक है। इससे समाज को एक सकारात्मक और सुरक्षित भविष्य की दिशा में प्रगति का मार्ग मिले।

आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथिक औषधियों की मानव जीवन में उपयोगिता

जी.के.बत्रा,
पर्यवेक्षक



मेरा व्यक्तिगत मानना है कि आधुनिक युग में आयुर्वेद और होम्योपैथी दोनों का महत्व बहुत अधिक है, और इन दोनों का अपना विशेष महत्व है। इन दोनों चिकित्सा पद्धतियों के महत्व के बारे में जानकारी निम्न है—

आयुर्वेद: आयुर्वेद भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है और वैदिक काल से प्रचलित है। आयुर्वेद का शाब्दिक अर्थ है “जीवन का विज्ञान” जिसका उद्देश्य मनुष्य को स्वस्थ रहने और रोगों का उपचार करने के लिए निरंतर योगदान करना है। आयुर्वेद एक प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति है, इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को स्वस्थ जीवन जीने के लिए संतुलित दिनचर्या, आहार और औषधि के माध्यम से रोगों से बचाना और उन्हें ठीक करना है। आयुर्वेद में जड़ी-बूटियों, वनस्पति, मिश्रण, पंचकर्म, आसन, ध्यान और योग के प्रयोग से रोगों का इलाज किया जाता है, और व्यक्ति को संपूर्ण स्वास्थ्य लाभ मिल जाता है। आधुनिक युग में, आयुर्वेद का महत्व एक स्वस्थ और प्राकृतिक जीवनशैली की खोज के संदर्भ में और विज्ञान के विकास के साथ बढ़ रहा है। यह विश्वभर में लोगों के बीच एक संचार विधि के रूप में प्रसारित हो रहा है जिससे विभिन्न रोगों के उपचार के लिए इसका उपयोग किया जा रहा है। आयुर्वेद में उपचार बिना किसी दुष्प्रभाव के होते हैं जिससे लोग इसे एक प्राकृतिक विकल्प के रूप में पसंद कर रहे हैं।

कुछ प्रमुख आयुर्वेदिक औषधियों के उदाहरण एवं उनके लाभ निम्न हैं:—

1. **त्रिफला:**— त्रिफला भारतीय आयुर्वेदिक दवा है जिसमें तीन फलों का मिश्रण होता है— आंवला, हरड, और बहेड़ा। यह पाचन शक्ति को बढ़ाता है, कब्ज को दूर करता है और पेट को साफ रखने में मदद करता है।
 2. **अश्वगंधा:**— अश्वगंधा एक जड़ी बूटी है जो शरीर की ताकत बढ़ाने, तनाव को कम करने, शारीरिक और मानसिक थकान को दूर करने, और शरीर के रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में मदद करती है।
 3. **तुलसी:**— तुलसी एक पवित्र पौधा है जिसमें जीवाणुरोधी, एंटीवायरल, और एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं। इसका उपयोग बुखार, सर्दी, खांसी, गले की खराश, रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने, जैसी समस्याओं के इलाज में मदद करती है।
 4. **नीम:**— नीम को जीवाणुरोधी, एंटीफंगल और एंटीवायरल गुणों के लिए जाना जाता है। इसका उपयोग त्वचा समस्याओं, पुरानी घावों, और खुजली के उपचार में किया जाता है।
 5. **अर्जुन:**— अर्जुन का रस दिल के स्वास्थ्य को बढ़ाने में मदद करता है, उच्च रक्तचाप को कम करने में मदद कर सकता है और हृदय रोगों के उपचार में उपयोगी हो सकता है।
 6. **आमला:**— आमला भरपूर विटामिन सी से भरा होता है और इसलिए रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाने में मदद करता है इसके नियमित सेवन से त्वचा, बाल, और आंतरिक रोगों का भी उपचार होता है।
 7. **शतावर:**— शतावर मां के दूध को बढ़ाने, और सामान्य शारीरिक ताकत को बढ़ाने में मदद करता है।
 8. **गिलोय:**— गिलोय का नियमित सेवन रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाने, आलस्य को कम करने, और विभिन्न विषाणुजनित संक्रमण से लड़ने में मदद कर सकता है।
- होम्योपैथिक— होम्योपैथी एक आधुनिक चिकित्सा पद्धति है, जिसकी उत्पत्ति जर्मन डॉक्टर समुएल हानेमन द्वारा की गयी थी। यह व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्तर पर विकारों के लक्षणों को ध्यान में रखते हुए दी जाती है।

होम्योपैथी के कुछ लाभों में निम्नलिखित लाभ मुख्य हैं:-

1. **व्यक्ति के संपूर्ण स्वास्थ्य पर ध्यान:-** होम्योपैथी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्तर पर उसके संपूर्ण स्वास्थ्य का ध्यान रखती है।
2. **दुष्प्रभाव:-** होम्योपैथी के उपयोग से संभवतः कोई दुष्प्रभाव या साइड इफेक्ट नहीं होता है, जैसा कि एलोपैथिक चिकित्सा पद्धतियों में आमतौर पर हो सकता है।
3. **व्यक्ति के लक्षणों के अनुसार इलाज:-** होम्योपैथी में दवाओं का चयन व्यक्ति के विशेष लक्षणों और समस्या के आधार पर किया जाता है।
4. **दिमागी शांति:-** होम्योपैथी दवाएं व्यक्ति को चिंता, तनाव और चिंता से दूर रखने में मदद कर सकती हैं।
5. **अनुभव के आधार पर:-** होम्योपैथी विधियां व्यक्ति के अनुभव के आधार पर काम करती हैं। चिकित्सा विशेषज्ञ रोग के सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए व्यक्ति की बीमारी के कारणों का पता लगाते हैं और उसे ठीक करने का प्रयास करते हैं।
6. **पूर्णता और सुरक्षा:-** होम्योपैथी औषधियाँ प्राकृतिक तत्वों से तैयार की जाती हैं और इसलिए उनका उपयोग सुरक्षित माना जाता है। यह चिकित्सा पद्धति साधारण रूप से किसी भी व्यक्ति के शरीर को कोई नुकसान नहीं पहुंचाती है।
7. **संपूर्ण स्वास्थ्य का समर्थन:-** होम्योपैथी शारीरिक और मानसिक तनाव को कम करने, शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने और संपूर्ण स्वास्थ्य का समर्थन करने में मदद करती है।

आयुर्वेद और होम्योपैथी दोनों की अपना विशेषता और उपयोग है। आयुर्वेद जीवनशैली एवं आहार के माध्यम से स्वास्थ्य सुधारने में मदद करता है, वहीं होम्योपैथी विशेष रूप से समस्या के लक्षणों के आधार पर रोग का इलाज करता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में दोनों चिकित्सा पद्धतियों का महत्वपूर्ण स्थान है, और विभिन्न रोगों के इलाज में दोनों का उपयोग किया जाता है। रोगी के स्थिति और उसकी आवश्यकताओं के आधार पर, चिकित्सा वैद्य उचित चिकित्सा पद्धति का चयन करता है।



आधुनिक युग में आयुर्वेद और होम्योपैथी का महत्व इसलिए बढ़ गया है क्योंकि ये दोनों प्रणालियां शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को संतुलित रखने के लिए एक दूसरे के पूरक बन गई हैं।

अधिकांश लोग इस युग में आयुर्वेद और होम्योपैथी का उपयोग करके प्राकृतिक और संतुलित तरीके से रोगों का उपचार करने की पसंद करते हैं। कुल मिलाकर, आधुनिक युग में आयुर्वेद और होम्योपैथी का महत्व यह है कि वे प्राकृतिक उपचार प्रदान करके स्वस्थ और संतुलित जीवन प्रमाणित करते हैं। इन दोनों प्रणालियों का उपयोग एक-दूसरे को पूरक बनाकर व्यक्तियों को अधिक स्वस्थ और उत्तम जीवन जीने में मदद करता है।

होम्योपैथी की कुछ प्रमुख औषधि निम्न हैं:—

1— आर्सेनिक एल्बम 30 सी०एच० (**Arsenicum album 30 CH**)- एक प्रमुख होम्योपैथिक औषधि है जो विभिन्न रोगों के उपचार जैसे कि बुखार, खांसी, जुखाम, छींकना, शारीरिक कमजोरी, एसिड और सूजन के लिए उपयोगी है। यह औषधि कोरोना काल में रामबाण साबित हुई थी। उक्त औषधि को तीन-तीन घंटे में लेना चाहिए।

2— एपिस 30 सी०एच० (**Apis 30 CH**)- इस औषधि को मधुमक्खी के काटने या कीड़े के काटने के बाद चुभन, दर्द और जलन में बहुत उपयोगी है इसे दो-दो घंटे में लिया जा सकता है।

3— एस्कूलस हिप्पोकैस्टेनम मदर टिंचर क्यू (**Aesculus Hippocastanum Mother Tincture Q**)- यह औषधि पाइल्स रोग में और जिसको मससे वाली पाइल्स होती है तो उसके लिए अत्यंत उपयोगी साबित होती है एवं कमर दर्द के साथ कब्ज हो तो उक्त औषधि बहुत अच्छा काम करती है। औषधि को 20-20 बूंद आधे कप पानी में दिन में चार (04) बार लिया जा सकता है।

4— पल्सेटिला क्यू (**Pulsatilla Q**)- यह औषधि महिलाओं के लिए अत्यंत उपयोगी है। मासिक धर्म नियमित न होना जिसके कारण चेहरे पर दाने हो जाते हैं। इसके लिए उक्त औषधि अत्यंत उपयोगी है। इस बीमारी से बचाव के लिए उक्त औषधि को दिन में तीन-तीन घंटे पर 20-20 बूंद आधे कप पानी में लेना होता है। एवं जिन महिलाओं का मासिक धर्म रुक जाता है तो इस अवस्था में पल्सेटिला का इस्तेमाल काफी बेहतर माना जाता है। इस बीमारी से बचाव के लिए उक्त औषधि की पल्स 10 एम (**Plus 10 M**) की तीन खुराक (03) रात को सोते समय 15-15 मिनट के अंतराल पर ले लेने से अगले ही दिन से मासिक धर्म शुरू हो जायेगा।

5— ग्लोनाइन 30 सी०एच० (**Glonoine 30 CH**)- जब अचानक से ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है, या फिर तेज सिरदर्द एवं लू लगने जैसी समस्याएं में इस दवाई का इस्तेमाल किया जाता है। इस औषधि को तीन-तीन घंटे में लिया जाना चाहिए।

उपरोक्त आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथी औषधियाँ दैनिक उपयोग में आने वाली हैं इन औषधियों को घर पर रखा जा सकता है समस्या के अनुसार सेवन के पूर्व चिकित्सक से परामर्श लेना उचित होगा। होम्योपैथी औषधियों को भोजन के पूर्व कम से कम 30 मिनट का अंतर बनाए रखना चाहिए एवं उपचार अवधि के दौरान शराब या तंबाकू का सेवन न करने से होम्योपैथी औषधियाँ और भी ज्यादा उपयोगी साबित होती हैं।

हिन्दी प्रेम (व्यंग)

श्री सुनीत जौहरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



एक हिन्दी प्रेमी नवयुवक,
कल हमारे शहर में आया ।
मंच पर चढ़कर, जोरदार शब्दों में चिल्लाया,
लेडीस एवं जेंटलमैन
इंडिया हमारा कंट्री और हम इंडिया के सिटीजन हैं
हिन्दी बोलना हमारी ड्यूटी है,
इसीलिए हिन्दी की किस्मत फूटी है ।
आज की यंग जेनरेशन ,व्हेन एवर माउथ खोलती है,
ओनली एंड ओनली इंग्लिश ही बोलती है ।
परसन की एबिलिटी को इंग्लिश में तोलती है ।
हमें हिन्दी को ,वर्ल्ड वाइड फैलाना है
दैन मेरे और भारतमाता के ड्रीम्स होंगे सच ,
लिसनिंग टु मी, थैंक यू वेरी मच ।

मातृभाषा को समर्पित कुछ भावनाएं
वंदनीय हिन्दी

जो मन की अभिव्यक्ति को, व्यक्त करने की भाषा है ।
जो माँ से बचपन में सीखी, वही हमारी मातृभाषा है ।।
हर उन्नति का मूल मंत्र है, पूरक हर भाषा की ।
आओ मिलकर करें वंदना, अपनी मातृभाषा की ।।



संदेह

श्री अरिंदम चटर्जी
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)



आप सोच रहे होंगे कि यह कौन सा विषय है जिस पर लिखा जा रहा है जबकि ज्यादातर लोग एवं डॉक्टर भी कहते हैं कि जो अपने मन में सन्देह रखते हैं अगर वह ज्यादा हो जाए तो इलाज की जरूरत होगी। पर कुछ विषय है जिसमें सन्देह होता है जैसे हमारे उम्र के लोगों ने जब अपना जीवनकाल शुरू किया था तब मनोरंजन के साधन थे नाटक देखना, मेले में घूमकर आनन्द लेना, रामायण महाभारत का कथापाठ सुनना तथा किसी न किसी खेल के माध्यम से आनन्द लेना। उस समय का एकमात्र मनोरंजक यंत्र था रेडियो किन्तु जब आज का समय देखता हूँ तो मनोरंजन के लिए काफी कुछ साधन टीवी, कंप्यूटर, स्मार्ट फोन जैसी चीजें हैं पर क्या लोग उस आनन्द को ले पा रहे हैं जो पहले सभी लोग साथ मिलकर बैठकर ले पाते थे। आज बहुत सी चीज आसानी से मिल रही है किन्तु साथ मिल कर कोई काम करने पर जो आनन्द मिलता था वह आज कहाँ। बहुत सी जगह आपको यह देखने को मिलेगा कि पांच छः दोस्त एक साथ बैठे हैं लेकिन वह सब अपने- अपने मोबाइल में ही व्यस्त हैं आपस में बात भी नहीं हो रहा है। क्या इसको हम तरक्की कहेंगे, सन्देह होता है कभी मन में भारत का इतिहास एवं उससे जुड़ी हुई महान व्यक्तित्व तथा उनकी वीरगाथा की याद आती है जब चन्द्रगुप्त मौर्य, समुद्रगुप्त या महामति अशोक जैसे सम्राट हुए जिन्होंने भारत की सीमा का सुदूर तक प्रसार किया पर जब आज के भारत को देखता हूँ तो लगता है कि चारों तरफ से भारत को दबाया - कुचला जा रहा है। क्या भारत में वीरता, क्षत्रियता की कमी पड़ गयी है जो देश के कमजोर नागरिकों पर हो रहे अत्याचार, शोषण का मुकाबला ही ना कर



सकें। लोग कहते हैं कि हम जागरूक हो गए, हम बहुत तरक्की कर चुके हैं पर रोज न्यूज चैनल पर ज्यादातर खबरें हमें दुखी करती हैं, कभी लगता है कि ऐसी न्यूज देख कर भी क्या फायदा। यदि इसको तरक्की कहा जाए तो मन में सन्देह उत्पन्न होता है कि हम लोग आज भी प्रगतिपूर्ण या प्रगतिवान देश नहीं बन पाए एवं दुनिया आज भी हमारे देश को प्रगतिशील देश के नजरिया से ही देखती है जबकि हम स्वाधीनता के 75 वर्ष पूर्ण कर चुके हैं लेकिन यह विश्व हमें जितना भी पिछड़ा हुआ समझे, हम एक विषय में दुनिया में सबसे आगे हैं जिससे हमें गर्व महसूस होना चाहिए और वह है जनसंख्या, जिसमें आज हम लोग चीन को भी पीछे छोड़ चुके हैं। इस जनसंख्या के सुविधा के लिये हमें जबरन शहरीकरण के रास्ते पर चलना ही पड़ता है एवं कहीं- कहीं हाई टेक सिटी भी बनानी पड़ती है। लेकिन कभी हमने सोचा की नगरीय सभ्यता को बढ़ावा देने के लिये कितनी उपजाऊ भूमि को हम लोग धीरे - धीरे नष्ट कर रहे हैं। फलस्वरूप एक दिन ऐसा भी आ सकता है कि हमें आनाज एवं पानी के लिए आपस में लड़ाई ना करनी पड़े। सन्देह होता है क्या इसी को उन्नति कहते हैं। ज्यादातर जाने- माने शहर बरसात के दिनों में पानी में डूब जाते हैं, यातायात ठप हो जाता है जबकि वह हाई टेक सिटी कहलाती हैं, क्या इसी को तरक्की कहते हैं, जागरूक मन को तो सन्देह होगा ही। हम लोग यह जानते थे कि जो बड़े होते हैं वह छोटे से प्यार का बर्ताव करते हैं, उसका संरक्षण करते हैं लेकिन दुनिया में ऐसे बड़े-बड़े देश हैं जो अपने अहंकार में चूर हो कर, अपनी प्रभुता को प्रतिस्थापित करने के कारण वर्षों पड़ोसी देशों के साथ लड़ाई करते रहते हैं। उनको अपना अधिकार कायम करने के

जोश में यह होश नहीं रहता कि इस धरती का कितना क्षति वह कर रहे हैं पर मजे की बात तो यह है कि धरती को इन्सान के रहने लायक रखने के लिए पूरे विश्व में कई बड़े – बड़े संस्थान है जो नियमित रूप से बैठक भी कर रहे है पर धरती का कोई उपकार नहीं कर पा रहा है। प्रकृति इस पर अपने विरोध स्वरूप सुनामी, भूस्खलन, असमय वृष्टि, भूकंप आदि से परिचित कराती रहती है पर हम मनुष्य को यह सब समझने की फुरसत ही नहीं। वर्चस्व की इस लड़ाई में यदि यह धरती ही रहने लायक ना रहे तो मानव सभ्यता कहाँ रहेगी इस बारे में कोई विचार फलीभूत नहीं हो रहा है। क्या इसी को सभ्य जगत या सभ्य समाज कहते हैं। मुझे तो सन्देह है, पाठक को क्या लगता है? अगर मानव समाज की भलाई के लिए विचार मन में आना अनर्थक है एवं सन्देह करना पाप है तो मुझे दोष तो जरूर हुआ है पर इसका निर्णय मैं पाठक कुल पर छोड़ रहा हूँ कि मैंने आपके मूल्यवान समय का गलत उपयोग तो नहीं किया?



अनुवाद में तकनीकी योगदान

श्री विवेक केशला

(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)



आज के तकनीकी युग में, भाषा का महत्व और बढ़ गया है क्योंकि हम विभिन्न भाषाओं के बीच संवाद करने के लिए विश्व भर से जुड़े हैं। इसलिए, भाषा अनुवाद के एप्लिकेशन भी तेजी से बढ़ रहे हैं। हिन्दी भाषा का महत्व भारत में अत्यधिक है, और यह भाषा विश्व के कई हिस्सों में बोली जाती है। इसलिए, हिन्दी के अनुवाद की आवश्यकता बहुत बढ़ गई है। हिन्दी में अनुवाद के उपकरण इस काम में मदद करते हैं। इनमें से कुछ प्रचलित उपकरण इस प्रकार हैं:—भाषिणी:— “भाषिणी” ऐप, जो हिन्दी भाषा के अनुवाद को आसान बनाने में मदद करता है। यह ऐप हमारे साहित्यिक, व्यापारिक, और सामाजिक संवाद को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने का माध्यम बन चुका है। भाषिणी ऐप का सबसे महत्वपूर्ण फीचर है मल्टीलिंग्वल अनुवाद। इसके माध्यम से आप हिन्दी के टेक्स्ट को अन्य भाषाओं में बड़ी आसानी से अनुवादित कर सकते हैं। एक और महत्वपूर्ण फायदा यह है कि इसे ऑफलाइन मोड में भी उपयोग किया जा सकता है, जिससे उपयोगकर्ताओं को इंटरनेट कनेक्शन की जरूरत नहीं होती है।

इस ऐप में वॉयस टेक्स्ट टू स्पीच (वॉयस वाणी से टेक्स्ट अनुवाद) की सुविधा भी होती है, जिससे उपयोगकर्ताएँ बोलकर अनुवाद कर सकते हैं। यह फीचर आपको किसी भी प्रिंटेड सामग्री को स्कैन करके उसका अनुवाद करने में मदद करता है, जिससे आपका काम और भी सरल हो जाता है। यह ऐप उन लोगों के लिए उपयोगी हो सकता है जो विदेश यात्रा करते हैं, क्योंकि इसके माध्यम से वे अन्य भाषाओं में स्थानीय भाषा में बात कर सकते हैं। भाषिणी ऐप का उपयोग व्यापारिक संवाद में भी किया जा सकता है, जिससे अंतरराष्ट्रीय व्यावसायिक संबंध मजबूत हो सकते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी यह ऐप शिक्षार्थियों के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है, क्योंकि यह विभिन्न भाषाओं के पाठ्यक्रमों को समझने में मदद कर सकता है।

कंठस्थ 2.0:— कंठस्थ 2.0 एक ऐसा उपकरण है जो भाषा अनुवाद की क्षमताओं में नवाचार कर रहा है। यह उपकरण वाणी से वाणी अनुवाद करने में मदद करता है, जिसका मतलब है कि यह आपके बोले गए शब्दों का अन्य भाषाओं में तुरंत अनुवाद कर सकता है। इस ऐप में वॉयस रिकॉर्डिंग की सुविधा होती है, जिससे आप अपनी आवाज को रिकॉर्ड करके अनुवाद कर सकते हैं। कंठस्थ 2.0 का एक और महत्वपूर्ण फीचर है मल्टीलिंग्वल अनुवाद, जिसके माध्यम से आप अपनी भाषा को कई अन्य भाषाओं में अनुवादित कर सकते हैं। इसे बिना इंटरनेट कनेक्शन के भी उपयोग किया जा सकता है, जिससे उपयोगकर्ताओं को कहीं भी अनुवाद करने की स्वतंत्रता मिलती है। कंठस्थ 2.0 भाषा अनुवाद में उच्च स्पष्टता और गुणवत्ता के साथ काम करता है, जिससे अनुवाद की सही प्राप्ति होती है।

कंठस्थ 2.0 भाषा अनुवाद के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण और उपयोगी उपकरण है, जिसका उपयोग हमारे दैनिक जीवन के कई अवसरों पर किया जा सकता है। इसकी उच्च स्पष्टता और गुणवत्ता भाषा अनुवाद को एक नई दिशा में ले गये है और भविष्य में इसका उपयोग और भी बढ़ उड़ान:— “उड़ान” एक गुगल द्वारा विकसित और बनाया गया उपकरण है, और इसका मुख्य उद्देश्य

वाणी से वाणी अनुवाद की प्रक्रिया को सरल और प्रभावी बनाना है। यह एक ऑडियो स्ट्रीम को समझने और उसे अन्य भाषाओं में अनुवादित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिसका अर्थ है कि आप किसी भी भाषा में बोली जाने वाली वाणी को अनुवाद कर सकते हैं।

इस ऐप में वॉयस रिकॉर्डिंग की सुविधा होती है, जिससे आप अपनी आवाज को रिकॉर्ड करके अनुवाद कर सकते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी उड़ान महत्वपूर्ण हो सकता है, क्योंकि यह छात्रों को अलग-अलग भाषाओं के पाठ्यक्रमों को समझने में मदद कर सकता है। उड़ान लेखकों, कवियों, और साहित्यिक क्रियाओं के क्षेत्र में भी उपयोगी हो सकता है, क्योंकि यह उनके लिखे गए कामों को अन्य भाषाओं में पहुंचाने में मदद कर सकता है।

सारांश: ये सभी महत्वपूर्ण और उपयोगी भाषा अनुवाद टूल हैं जो विभिन्न संदर्भों में भाषा संवाद को सरल और प्रभावी बनाने के लिए डिज़ाइन किए गये हैं। ये उपकरण व्यक्तिगत और पेशेवर उपयोगकर्ताओं के लिए भी उपयोगी हो सकते हैं और भाषा के क्षेत्र में नए दिशानिर्देश देने में मदद कर सकते हैं।



स्त्री भी छू सकती है

पूनम जायसवाल
पत्नी, श्री मनोज जायसवाल
(स.ले.प.अ.)



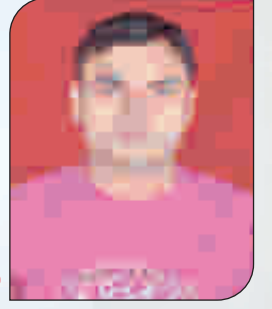
आकाश,
बस उसे है मौके की तलाश।
नहीं है देश महान,
जो करते हैं स्त्री का सम्मान
घरती जैसी सहनशीलता है
स्त्री में,
पानी जैसी शीतलता है स्त्री में।
नारी को प्रकृति ने दोहे शक्ति
सारी,
अपमान न करो कहकर इसको
बेचारी।

समानता का अधिकारी पाये,
महिलायें अब आगे आये।
अब अबला नहीं रही नारी,
सबला बनने की कहानी है जारी
नारी है तो परिवार है,
सुंदर जीवन का आधार है।
जब उसे उचित सम्मान मिले,
घर में खुशियों के फूल खिले

सबला

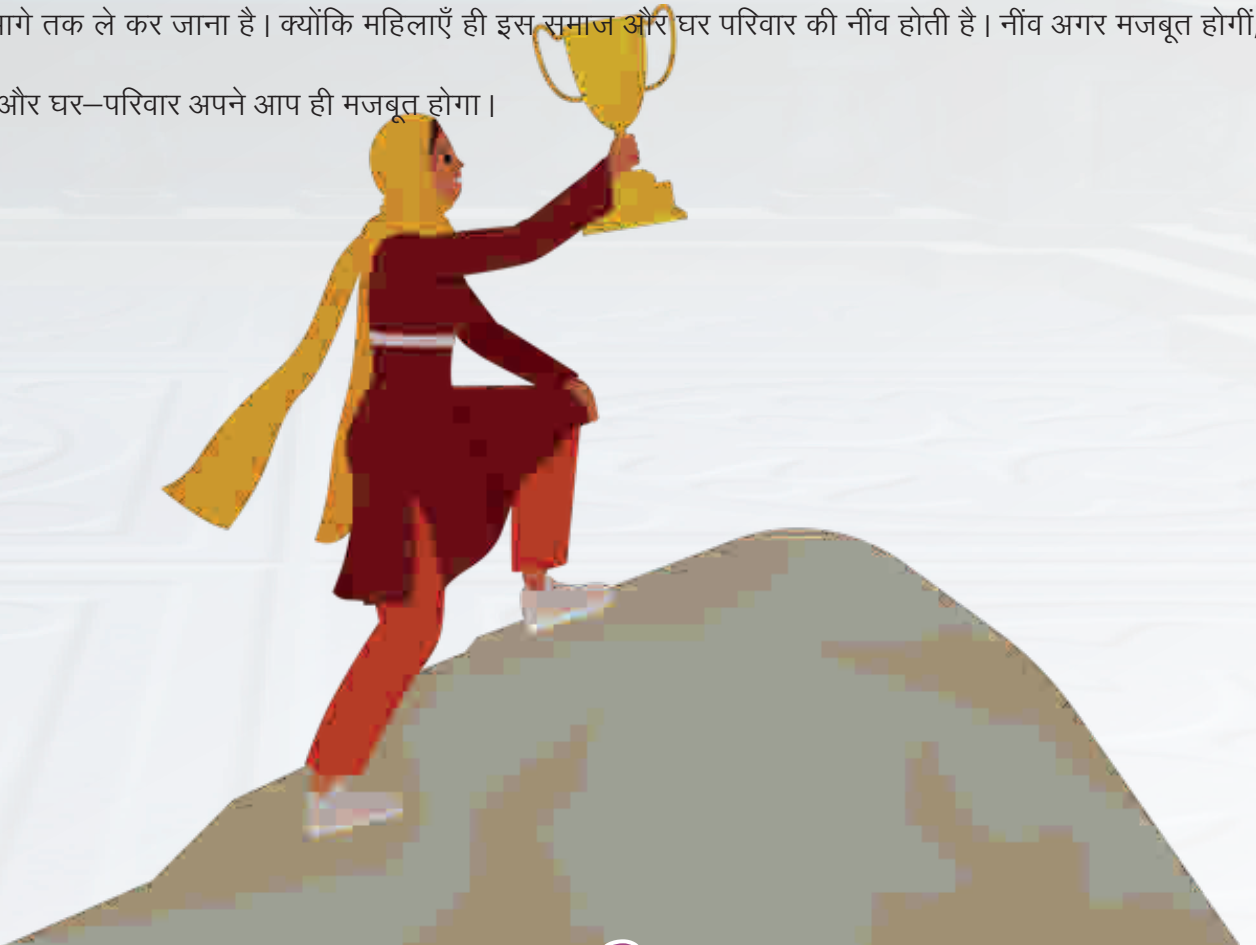
श्री योगेश त्यागी

(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)



आज के युग में महिलाएँ जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। आज की नारियाँ पुरुष से किन्हीं भी मायनों में कम और घर की चारदीवारी में कैद नहीं हैं। वे उच्च शिक्षित हैं। हर तरह के उच्चतम पदों पर आसीन हैं। आज महिलाओं ने ये साबित कर दिया है कि वह हर क्षेत्र में पुरुषों के समान ही नहीं बल्कि उनसे बेहतर हैं। आज महिलाएँ अपने ऑफिस के साथ – साथ घर और परिवार की जिम्मेदारी बहुत अच्छे से निभा रही हैं।

इस पुरुष प्रधान देश में महिलाओं का सशक्तिकरण बहुत आवश्यक है। यह महिलाओं को उनके उचित विकास और स्वतंत्र होने के उनके अधिकारों को समझने के लिए सशक्त बना रहा है। महिला सशक्तिकरण इंसान, अर्थव्यवस्था या पर्यावरण से जुड़ी किसी भी बड़ी या छोटी समस्या शक्तिकरण के कारण आज की महिलाएँ अपने स्वास्थ्य, शिक्षा, करियर, नौकरी और परिवार समाज के प्रति जिम्मेदारियों के बारे में अधिक जागरूक हो रही है। महिला सशक्तिकरण महिलाओं को शक्तिशाली बना रहा है। ताकि वे अपने जीवन, परिवार और समाज के लिए सही निर्णय ले सकें। हमें देश की आधी आबादी अर्थात् महिला शक्ति को बहुत आगे तक ले कर जाना है। क्योंकि महिलाएँ ही इस समाज और घर परिवार की नींव होती है। नींव अगर मजबूत होगी, तो समाज और घर-परिवार अपने आप ही मजबूत होगा।



अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा हिंदी

श्री मधुकर मिश्र
सहायक (पर्यवेक्षक)



लोकतांत्रिक स्तर पर हिंदी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है क्योंकि उसके बोलने व समझने वालों की संख्या संसार में एक तिहाई है। विश्व के 132 देशों में प्रवासी भारतीय मूल के दो करोड़ लोग हिंदी माध्यम से ही अपना कार्य निष्पादित करते हैं। एशियाई संस्कृति में अपनी विशिष्ट भूमिका के कारण हिंदी एशिया महाद्वीप की प्रतिनिधि भाषा ही है।



अंतर्राष्ट्रीय भाषा से अभिप्राय है . "अधिकांश देशों की संपर्क भाषा।" इस परिपेक्ष में अंग्रेजी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा की मान्यता मिली है तो फिर हमारी राजभाषा हिंदी को अभी तक अंतर्राष्ट्रीय भाषा का दर्जा क्यों नहीं मिला है। राजभाषा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाषा का दर्जा प्राप्त होने के लिये उस भाषा में क्या – क्या गुण होने चाहिए?

1. उस भाषा को विश्व के अधिकांश देशों में संपर्क भाषा के रूप में मान्यता मिली हो।
2. उसकी अपनी पारिभाषिक शब्दावली हो, जो उस भाषा को वाङ्मयी बनाती हो।
3. वह भाषा अपनी सहयोगिनी भाषाओं को प्रवाहमयी बनाती हो।
4. भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिसूचित भाषाओं की श्रेणी में पंक्तिबद्ध किया गया हो।
5. वह भाषा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर निरन्तर उन्नति प्राप्त व प्रगतिशील हो। 10 जनवरी को हम प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

निष्कर्ष : उपरोक्त गुणों को अपने में निर्विवाद रूप से समाहित किये हुए हमारी राजभाषा संयुक्त राष्ट्र संघ की पंक्ति में अंतर्राष्ट्रीय भाषा का ऐतिहासिक गौरव हासिल करने की प्रक्रिया में खड़ी है, जो निःसंदेह उसे प्राप्त हो सकेगा।

आनंदमय जीवन जीने की कला

श्री नेत्रपाल
(लेखापरीक्षक)



जीवन मनुष्य का महत्वपूर्ण धन है, और आनंदमय जीवन जीने की कला उसे खुशहाल और प्रफुल्लित बनाने का एक मार्ग है। यह एक योग्यतापूर्ण, स्थिर और सात्विक जीवन जीने का तरीका है जो सद्गुणों, आत्मविश्वास, सुख, संतोष और उच्चता के साथ भरा हुआ है। इस कला को समझना और अपनाना बहुत ही महत्वपूर्ण है ताकि हम अपने जीवन को आनंदमय बना सकें।

सुख और आनंद को अक्सर अधिकांश लोगों के द्वारा एक ही समझ लिया जाता है लेकिन दोनों में बहुत बड़ा अंतर है, आनंद आत्मा की आध्यात्मिकता की अवस्था है जबकि सुख सांसारिक पदार्थों से मिलता है, आनंद परमात्मा का नाम, जप एवं स्मरण करने से प्राप्त होता है। सुख अस्थायी होता है, सुख की धूप को दुखों के बादल कभी भी घेर सकते हैं। सुख हमेशा बाहर के लोगों के द्वारा मिलता है इसलिए इसके जाने की आशंका हमेशा बनी रहती है। आनंदमय जीवन जीने की कला में सबसे पहले हमें स्वयं को समझना होता है। आनंद स्वयं के अंदर से उपजता है इसलिए आनंद को किसी के भी द्वारा छीना या चुराया नहीं जा सकता है।

हमें अपने जीवन को समय प्रबंधन, लक्ष्यों का निर्धारण आदि के द्वारा संगठित रखने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। आनंदमय जीवन जीने की कला में सहयोग और सेवा की भावना भी महत्वपूर्ण है। वर्तमान में सारी भागदौड़ सुख की प्राप्ति के लिए है, अक्सर लोग दूसरों का शोषण करके सुखों का महल खड़ा करने की कोशिश करते हैं सुख प्राप्ति के लिए इंसान नैतिक अनैतिक कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाता है। आनंद अनुभूति की चीज है जिसे हम केवल महसूस कर सकते हैं उसे विचारों द्वारा अभिव्यक्त नहीं कर सकते। सुख और दुख की यात्रा दो विपरीत दिशाओं से चलती है सुख हमें भौतिक वस्तुओं की ओर ले जाता है इसलिए यह इंसान को लालची, आलसी, भी बना देता है शायद इसीलिए अध्यात्म में सुख को सम्मान नहीं दिया गया और वहां हर साधक का लक्ष्य भगवद नाम के जरिए आनंद की खोज होती है ना कि सुख की, सुख प्राप्ति में तृष्णा हमेशा ही बनी रहती है और एक सुख प्राप्त होते ही दूसरे सुख को हासिल करने का प्रयास करने लगते हैं। जबकि आनंद परमात्मा का स्मरण एवं सेवा भाव से मिलता है सुख में जीने का आदी मनुष्य सुख के बिना नहीं रह सकता है दूसरी ओर आनंद में रहने वाला मानव बड़ी से बड़ी समस्या को भी हंसते हुए बर्दाश्त कर लेता है। सेवा भावना से हमारा जीवन अधिक उदार और संयमित बनता है और हमें प्रेम के साथ जीने का आनंद मिलता है। हमें अपने शरीर और मन के लिए स्वस्थ आहार लेना, नियमित व्यायाम करना, और योगाभ्यास करना चाहिए।

लोग गंगा स्नान के समय शरीर तो धोते हैं पर शरीर को धोने से कुछ नहीं होगा मन के अंदर के विकारों जैसे कि अहंकार, काम, क्रोध, लोभ, एवं मोह को गंगा में धोने का प्रयास करना चाहिए, असल में गंगा स्नान का अर्थ है कि गंगा में प्रवेश के उपरांत बुराइयों का विसर्जन कर देना। सभी मनुष्यों के अंदर कोई ऐसी चीज जरूर है जो उन्हें दूसरों की मदद के लिए प्रेरित करती है और शुभ कार्यों में आगे आने के लिए मजबूर कर देती है वास्तव में यही भगवद भाव है जो कि सभी मनुष्यों के अन्तःकरण में पाया जाता है।

जीवन में आनंदित और सफल होने के लिए सरलता, सहजता, एवं सजगता आदि का होना अत्यंत आवश्यक है। सरलता हमारा सद्गुण ही नहीं बल्कि हमारा स्वभाव भी होना चाहिए, कोई भी परिस्थिति हमेशा के लिए नहीं रहती है हमारे मन को जो परिस्थिति अनुकूल लगती

हैं उसे हम सुख कहते हैं और जिस परिस्थिति को मन प्रतिकूल समझता है उसे हम दुख कहते हैं। सुख इसलिए सुख है क्योंकि जीवन में दुख भी है दुख ना होता तो सुख भी सुख नहीं लगता। संक्षेप में कहें तो, आनंदमय जीवन जीने की कला स्वयं को जानना, आध्यात्मिक चिंतन करना, प्रकृति की सुंदरता का आनंद उठाना, सहयोग और सेवा करने और स्वास्थ्य की देखभाल करने का तरीका है।

आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाये तो ऐसा शायद ही कोई व्यक्ति मिले जिसमें कोई कमी ना हो या जिसमें कोई भी विशेषता ना हो। मेरे दृष्टिकोण से सभी लोग लगभग 25 वर्ष की अवस्था में ही अपने घर परिवार को छोड़कर एक नये परिवार अर्थात कार्यालय में नौकरी करने आ जाते हैं और अपनी सेवाएं लंबे समय (60 वर्ष) तक प्रदान करते हैं। कुछ लोग नौकरी को ईश्वर से प्राप्त प्रसाद के रूप में भी मानते हैं। वे मानते हैं कि अपने कर्तव्यों के पूर्ण करने के लिए जो अवसर उन्हें मिला है, वह उन्हें भगवान की कृपा से ही मिला है। इस प्रकार की श्रद्धा और आस्था मानवीय जीवन के अंतर्गत हैं और यह लोगो को अधिक आत्मनिर्भर और समर्पित बनाती है।

कार्यालयों में सभी का मिलजुल कर रहना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच सहयोग को स्थापित करने का महत्वपूर्ण कारक है, जिसके द्वारा एक सफल, सुचारु, संतुलित, और न्यायसंगत रूप से कार्यप्रणाली स्थापित की जा सकती है, इससे विभिन्न विभागों के बीच संवाद सुव्यवस्थित होता है और नीतियों, दिशा . निर्देशों, और लक्ष्यों को समझने और प्राप्त करने की क्षमता में सुधार होता है।

यहां कर्मचारियों को आपसी सहयोग, जानकारी साझा करने, समस्याओं का समाधान करने, और सुझाव प्रदान करने में सुविधा मिलती है, और नागरिकों के लिए अच्छी सेवाएं प्रदान करने में मदद मिलती है एवं विभिन्न विभागों के बीच सहयोग सुनिश्चित किया जा सकता है ताकि कार्य प्रभावी और समय पर पूरा किया जा सके। धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जाये कि हमें भगवान की कृपा से नौकरी प्राप्त हुई है।



हालांकि, हमें यह भी समझना चाहिए कि जीवन में सफलता केवल नौकरी से ही नहीं मिलती है। सफलता के लिए हमें मेहनत, समर्पण, नैतिकता, और कौशल भी जीवन में चाहिए। अच्छी नौकरी के साथ-साथ हमें समाज में सद्भावना और दया के साथ आनंदमय जीवन जीने की भी जरूरत होती है। हम सभी जहां पर भी नौकरी करते हैं, तो उस स्थान को पूजनीय मानना चाहिए क्योंकि वहां से हमें आर्थिक आवश्यकताओं की प्राप्ति होती है। हम अपनी जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ अन्य लोगों की मदद करके और सेवा करके समाज को भी योगदान देने का अवसर प्राप्त करते हैं।

हम सबको नौकरी पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी के साथ करनी चाहिए। इसमें ही हमारी प्रगति संभव है, इस तरह के सत्यनिष्ठ कार्य हमारे आस-पास के लोगों के लिए भी एक प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं। सभी लोगों के लिए नौकरी उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाती है जो उन्हें आर्थिक सुरक्षा, सम्मान, और सामाजिक स्थान प्रदान करती है। हमें कभी भी कार्यालय परिवार के साथ मतभेद नहीं करना चाहिए और सदैव एक दूसरे के सहयोग के लिए तत्पर रहना चाहिए। यह सहयोगी और समर्पित भावना हमें एक साथ अधिक समृद्ध आनंदमय जीवन जीने की कला सिखाती है।

दिवाली और गरीबी

श्री अश्विनी कुमार
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)



दीवाली श्रीराम के अयोध्या लौटने पर मनाया गया था,

अयोध्या को इस खुशी में दीयों से सजाया गया था।

हर साल ऐसे ही है हम दीवाली मनाते

अपने घर आँगन को हम है दीयों से सजाते

इस बार अयोध्या में भी दीवाली मनाया गया

15 लाख दीयों से अयोध्या को सजाया गया

अद्भुत अप्रतिम सौन्दर्य क्या बात थी उस रात

दिये ही दिये थे या उनको सजाने वाले हाथ

लगता था जैसे स्वर्ग का सारा सौंदर्य धरा पर उतर आया है

कि खुद विश्वकर्मा ने इसे अपने हाथों से सजाया है

अमावस की घोर काली रात में भी अंधेरों का नाम नहीं था,

हर तरफ रोशनी थी, लौ को तनिक भी विश्राम नहीं था।

लगा सबने तम को दूर भगाने की थी कसम खाई,

इसलिए शायद कोना कोना थी रोशनी से नहाई ।

फिर, जैसे जैसे दिये बुझते गए, अंधेरों का साया बढ़ता गया

तम ने फिर से घेरा बढ़ाया, अँधेरा हर ओर चढ़ता गया

फिर रात की खामोशी में जब सब कुछ खो गया



बुझते दीयों में मेरा मन भी जब बेचौन हो गया

मैं अकेला अंधेरी रातों में निकला चलने लगा

दूर एक छाया देख दिल जलने लगा

पास और पास जाकर जब मैं देखने को हुआ

जो कुछ दिखा वो था अचरज भरा मेरे मन को छुआ

एक लड़की चीथड़ों में लिपटी हुई कुछ सकुचाकर

तेल इकट्ठा कर रही थी, बुझे दीयों को उठाकर

बड़ा अचरज भरा दृश्य था मन व्याकुल हुआ

क्यों उठा रही होगी बचे तेल में सोचता चला

जाकर पूछा तो बोली वो रोनी सूरत बनाकर

चाहती थी ले जाना इसको मैं सबसे बचाकर

फिर बेचकर इसको मैं कुछ पैसे बनाती

उनसे फिर अबकी मैं दीवाली मनाती

सुनकर उसे मैं कुछ सोचने लगा

शाम को रोशनी को फिर कोसने लगा

ऐसी रोशनी ही क्या जो हर घर को ना रोशन करे

चारों दिशाएँ जगमगाएँ, मगर अपने पास के न तम को हरे

चलो ऐसे कुछ दिये इस बार जलाने चले

गरीबों के घर से अंधेरा मिटाने चले

तम को हर इस बार चहुओर उजाले से भर दें ।

दिये के नीचे जो अँधेरा है उसे भी हर ले ।



भारत सरकार की राजभाषा नीति और राजभाषा के प्रति हमारा दायित्व



श्री दिलीप कुमार
(कनिष्ठ हिंदी अनुवादक)

संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार हिंदी संघ की राजभाषा है। अनुच्छेद 343 (2) के अनुसार संविधान के लागू होने के 15 वर्षों की अवधि तक अर्थात् 25 जनवरी, 1965 तक संघ सरकार के कार्यों में अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने की व्यवस्था की गई थी। अनुच्छेद 343 (3) में संसद को यह अधिकार दिया गया कि वह अधिनियम पारित करके 26 जनवरी, 1965 के बाद भी सरकारी कामकाज में अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने के बारे में व्यवस्था कर सके। तदनुसार इस शक्ति का प्रयोग करते हुए राजभाषा अधिनियम, 1965 पारित किया गया जिसे 1967 में संशोधित किया गया। राजभाषा अधिनियम के अधीन राजभाषा नियम, 1976 में बनाए गए। राजभाषा अधिनियम पारित करने के साथ-साथ दिसंबर, 1967 में संसद के दोनों सदनों में भाषा नीति संबंधी संकल्प पारित किया गया। जिसे 18 जनवरी, 1968 को अधिसूचित किया गया था। इस संकल्प के पैरा-1 के अनुसार हिंदी के प्रसार तथा विकास और संघ के विभिन्न सरकारी प्रयोजनों के लिए इसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने हेतु प्रत्येक वर्ष गहन एवं विस्तृत कार्यक्रम तैयार करने और उसे कार्यान्वित करने का दायित्व केंद्र सरकार को सौंपा गया। इसके अनुपालन में राजभाषा विभाग द्वारा हर वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाता है जिसमें केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों द्वारा एक वर्ष में हिंदी में काम करने के लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं।

प्रमुख प्रावधान:-

राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियमों में हिंदी के प्रयोग के बारे में निम्नलिखित चार प्रमुख प्रावधान हैं—

1. राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) में उल्लिखित कागजात जैसे . सामान्य आदेश, अधिसूचनाएं, संकल्प, प्रेस विज्ञप्तियां, संविदाएँ, करार, संसद के समक्ष प्रस्तु किए जाने वाले कागजात आदि द्विभाषी अर्थात् हिंदी और अंग्रेजी में जारी किए जाएँ।
2. हिंदी राज्यों एवं उन राज्यों को जिन्होंने केंद्र सरकार के साथ हिंदी में पत्राचार करना स्वीकार कर लिया है, को भी मूल पत्रादि हिंदी में ही भेजे जाएँ।
3. हिंदी राज्यों में, स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों के साथ पत्राचार में भी हिंदी का प्रयोग किया जाए।
4. कहीं से भी प्राप्त हिंदी पत्रों का उत्तर हिंदी में ही दिया जाए।

‘क’, ‘ख’ एवं ‘ग’ क्षेत्र के राज्य संघ शासित क्षेत्र।

राजभाषा नीति के अनुपालन के विचार से राजभाषा नियम, 1976 में देश में ‘क’, ‘ख’ एवं ‘ग’ क्षेत्र शामिल है।

‘ख’ क्षेत्र में गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब राज्य और चंडीगढ़ संघ शासित क्षेत्र शामिल है।

‘ग’ क्षेत्र में वे सभी राज्य एवं संघ शासित क्षेत्र आते हैं जो उपर्युक्त ‘क’ एवं ‘ख’ में शामिल नहीं हैं।

कुछ कार्य ऐसे हैं जिसके लिए राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियम के अनुसार शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में या द्विभाषी रूप में करने के लिए अपेक्षित हैं। इनमें राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन, हिंदी पत्रों का उत्तर हिंदी में देना तथा ‘क’ एवं ‘ख’ क्षेत्रों के कार्यालयों में ‘क’ एवं ‘ख’ क्षेत्रों की राज्य सरकारों तथा जनता के साथ हिंदी में पत्र व्यवहार करना, कार्यालयों के लिये आवश्यक उपकरण द्विभाषी ही खरीदना आदि शामिल है। वार्षिक कार्यक्रम में ‘क’, ‘ख’ एवं ‘ग’ तीनों क्षेत्रों के लिए अन्य मदों में केंद्र सरकार के कार्यालयों के साथ पत्राचार हिंदी में देना, कम्प्यूटरों में देवनागरी में टाइपिंग की सुविधा आदि कार्य निर्धारित परिमाण में करना अपेक्षित है।

राजभाषा का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए मंत्रालयों एवं विभागों में हुई कार्यान्वयन की प्रगति की जानकारी और समीक्षा, उनके द्वारा भेजी जाने वाली प्रगति रिपोर्टों के आधार पर राजभाषा विभाग द्वारा की जाती है। देश को विभिन्न भागों में वर्गीकृत करके राजभाषा भाग के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों में जाकर हिंदी के कार्यालय की प्रगति की सीधी जानकारी भी प्राप्त की जाती है। राजभाषा विभाग के विशेष प्रयासों के परिणामस्वरूप विभिन्न बैंकों की अनेक शाखाओं में केवल हिंदी में कार्य करने की व्यवस्था की गई है।

राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए आवश्यक है कि भारत सरकार के उच्चस्तरीय अधिकारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अपने अधीनस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रेरित करें और राजभाषा के गतिशील विकास में पूर्ण योगदान देकर देश को गौरवान्वित करें।



विस्तृत जानकारी तथा सुलभ संदर्भ के लिए राजभाषा विभाग के विभिन्न अनुदेशों का सारांश नीचे दिया जा रहा है। आइए एक नजर हम अपनी जिम्मेदारियों पर डालें—

1. कहीं से भी प्राप्त पत्रों का उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दिया जाना चाहिए।
2. क्षेत्र 'क' अर्थात् उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और संघ शासित क्षेत्र दिल्ली तथा अंडमान निकोबार में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों से उस क्षेत्र के अन्य कार्यालयों और जनता को भेजे जाने वाले सभी पत्र हिंदी में होने चाहिए।
3. क्षेत्र 'ख' अर्थात् महाराष्ट्र, पंजाब गुजरात, संघ शासित क्षेत्र चंडीगढ़ स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों तथा राज्य सरकार के कार्यालयों के साथ पत्र व्यवहार हिंदी में करना चाहिए।
4. क्षेत्र 'ख' की जनता के साथ पत्र व्यवहार हिंदी या अंग्रेजी में किए जा सकते हैं।
5. क्षेत्र 'क' के कार्यालयों/व्यक्तियों को भेजे जाने वाले लिफाफों पर पता हिंदी में लिखा जाना चाहिए।
6. क्षेत्र 'ग' में स्थित कार्यालयों को 'क' एवं 'ख' क्षेत्रों के कार्यालयों एवं व्यक्तियों के साथ पत्राचार हिंदी में करने का प्रयास करना चाहिए।
7. क्षेत्र 'ग' ('क' और 'ख' के अलावा अन्य राज्यों व संघशासित राज्य क्षेत्रों में सम्मिलित नहीं) में स्थित कार्यालयों से हिंदी में पत्राचार किया जा सकता है लेकिन आवश्यकता होने पर उस पत्र का अंग्रेजी रूपांतरण भी भेजा जा सकता है।
8. क्षेत्र 'ग' स्थित ऐसे कार्यालयों के साथ पत्र व्यवहार हिंदी में किया जा सकता है जिनके 80 प्रतिशत कर्मचारी हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखते हैं।

9. पत्राचार के दौरान अंग्रेजी के जो शब्द हिंदी में मिल-जुल गए हैं, जैसे बैंक, टाइपिस्ट, टेलीफोन, रेल, पोस्ट-ऑफिस आदि शब्दों को ज्यों का त्यों देवनागरी लिपि में लिखा जा सकता है।

10. हिंदी पत्र व्यवहार में अंकों के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप **1,2,3,4,5,6,7,8,9,0** का प्रयोग होना चाहिए।

हिंदी तथा अंग्रेजी का एक साथ प्रयोग।

- सभी प्रकार की सूचनाएं द्विभाषा में जारी की जानी चाहिए।
- प्रशासनिक कार्यालय में सभी परिपत्र, संकल्प, नोटिस, करार आदि द्विभाषी में जारी किए जाने चाहिए।
- रबर की मोहरें द्विभाषी होनी चाहिए।
- सभी साइन बोर्ड, नाम पट्ट, काउंटर बोर्ड द्विभाषी रूप में दर्शाए जाने चाहिए।
- हिंदी भाषी प्रदेश में साइन बोर्ड, नामपट्ट आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाने चाहिए। ऐसी स्थिति में भाषाओं का क्रम निम्नानुसार होगा—
- पहली पंक्ति— प्रदेश की राजभाषा, दूसरी पंक्ति— हिंदी, तीसरी पंक्ति— अंग्रेजी
- फाइलों, रजिस्ट्रों और फार्मों आदि की छपाई द्विभाषी होनी चाहिए।
- अधीनस्थ कार्यालय का नाम द्विभाषी रूप में दर्शाया जाए।
- संपूर्ण भारत में दिए जाने वाले विज्ञापन हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में एक तारीख को किए जाने चाहिए। हिंदी का विज्ञापन हिंदी समाचार पत्र में दिया जाना चाहिए।
- संस्थान के निमंत्रण पत्र द्विभाषीध्वनिभाषी रूप में छपवाने चाहिए।
- कार्यपालकों/अधिकारियों के विजिटिंग कार्ड द्विभाषी छपवाने चाहिए।
- संस्थान की सभी कारों में संस्थान का नाम पहले हिंदी में तथा बाद में अंग्रेजी में दिया जाना चाहिए।
- हिंदी भाषी क्षेत्रों में कर्मचारियों को दिए जाने वाले विज्ञापन, आरोप-पत्र आदि हिंदी और अंग्रेजी में दिए जाने चाहिए। अहिंदी भाषी क्षेत्र में भी यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि उसे हिंदी में दिया जाए तो उसकी तत्काल व्यवस्था की जानी चाहिए।

अन्य दायित्व

- प्रत्येक तिमाही समाप्त होने के 07 दिनों के भीतर हिंदी प्रगति की तिमाही रिपोर्ट संबंधित कार्यालय को भेज दी जानी चाहिए।
- राजभाषा से संबंधित अनुदेशों की अलग से एक फाइल रखी जानी चाहिए।
- हिंदी में प्राप्त और उत्तरित पत्रों और हिंदी में किए जा रहे सभी कार्यों का अलग से विदिवत रिकॉर्ड रखा जाना चाहिए।
- कार्यालय में हिंदी पत्रिकाएँ एवं हिंदी समाचार पत्र मंगाए जाने चाहिए।
- सुनिश्चित करें कि उपस्थिति पंजिका में कर्मचारी अपना नाम हिंदी में लिखें तथा हस्ताक्षर हिंदी में करें।
- हिंदी टाइपिंग-आशुलिपि में आशुलिपि में प्रशिक्षित कर्मचारियों से हिंदी में पूरा काम लिया जाना चाहिए।
- कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए अधिक से अधिक संख्या में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भेजा जाना चाहिए। कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद संबंधित कर्मचारी को अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने में सहायता हेतु अधिक से अधिक संख्या में शब्धकोश एवं शब्दावलियों तथा अन्य संदर्भ साहित्य उपलब्ध कराए जाने चाहिए।
- अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि जागृत करने एवं हिंदी का वातावरण बनाने के लिए अधिक से अधिक संख्या में हिंदी की अच्छी पुस्तकें मंगाई जानी चाहिए।
- अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रत्येक तिमाही हिंदी की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिए।
- हिंदी दिवस एवं हिंदी माह एवं हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया जाना चाहिए। जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन अपेक्षित है।

नेक इरादा

श्री अशोक कुमार
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)



हमारे विद्यालय में अंग्रेजी की किताब में एक बहुत ही मजेदार कहानी थी जो कि मिस्टर ईगन और उनके भोलेभाले, लेकिन वफादार नौकर जेम्स के बारे में थी। मिस्टर ईगन ने अपने नौकर को डाकघर पत्र लेने भेजा। नौकर जेम्स डाकघर पहुंचा और उसने पोस्टमास्टर से अपने मालिक के पत्र के बारे में पता किया। उन दिनों पत्रों पर दूरी के हिसाब से डाक व्यय लगता था जिसे पत्र पाने वाले को देना पड़ता था। दूरी के हिसाब से पोस्टमास्टर ने जेम्स से डाक व्यय के रूप में 10 सेंट मांगे। जेम्स ने देखा था कि उससे पहले कतार में खड़े आदमी को केवल पांच सेंट में पत्र मिल गया था जबकि उसका पत्र आकार में बड़ा था जबकि मिस्टर ईगन का पत्र आकार में छोटा था और उसके लिए पोस्ट मास्टर 10 सेंट मांग रहा था। वफादार जेम्स को लगा कि पोस्टमास्टर उसके मालिक को ठग रहा है। उसने 10 सेंट देने से मना कर दिया और पोस्ट मास्टर से पाँच सेंट में पत्र देने का बार-बार अनुरोध किया। अंत में चिढ़कर पोस्ट मास्टर ने उसे पत्र देने से मना कर दिया।

नौकर वापस घर पहुंचा और मालिक को सारी बात बताई और कहा कि पोस्ट मास्टर उसे ठगना चाहता था इसलिए वो पत्र नहीं लाया। इस पर मालिक नाराज हुआ और नौकर को दुबारा पत्र लेने भेजा। नौकर फिर से डाकघर गया और पत्र लेकर वापस आया और मालिक के हाथ में दो पत्र रख दिये — एक तो मालिक का था और दूसरा उसने डाकघर से चुरा लिया था। इस तरह उसने मालिक के घाटे को पूरा करने की कोशिश की।

नौकर कोई चोर नहीं था बल्कि वह मात्र अपने मालिक को 'ठगी' से बचाना चाहता था। उसका इरादा नेक था पर समझ कम थी। अच्छे कामों और अच्छे परिणामों के लिए केवल नेक इरादा होना ही पर्याप्त नहीं होता है बल्कि पर्याप्त बुद्धि, सटीक जानकारी, सम्यक ज्ञान, सही समझ, और सही और गलत में अंतर करने की क्षमता के साथ-साथ देशकाल परिस्थिति के अनुसार लचीला दृष्टिकोण भी जरूरी होता है। खासकर ऐसे लोगों जिनके पास लाखों करोड़ों लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकने की क्षमता हो, उनके लिए तो नेक इरादे के साथ-साथ किसी योजना को लागू करने से पहले योजना की विस्तृत समीक्षा और उसके गुण-दोषों पर विस्तृत चर्चा करना अति आवश्यक होता है।

बहुत से लोगों को लगता है कि किसी अच्छे उद्देश्य के लिए यदि थोड़ा बहुत झूठ बोल भी दिया, कुछ चालाकी कर भी दी तो इसमें कुछ बुराई नहीं है बल्कि ऐसे झूठ से समाज का भला ही होगा। लोग यदि किसी विचारधारा के समर्थक हों, तो अपनी विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए तरह-तरह के झूठ और पाखंड फैलाएंगे ताकि अधिक से अधिक लोग उस विचारधारा से जुड़ सकें। ऐसे लोग खुद को सही मानते हैं लेकिन उनकी गलतियों का दंश देश, समाज और सम्पूर्ण मानवता को भुगतना पड़ता है। इसी तरह अति धर्मांध लोगों को लगता है कि यदि वे अपने धर्म की रक्षा के लिए किसी को मार भी दें तो ये पुण्य का काम है क्योंकि उनको लगता है कि धर्म की रक्षा उनका कर्तव्य है। अपने हिसाब से उनके इरादें तो नेक रहते हैं पर उनके कृत्यों को किसी भी प्रकार से उचित नहीं कहा जा सकता है।

कभी-कभी कुछ शासक ऐसे होते हैं जिनके इरादे अच्छे होते हैं पर अगर उनके पास धैर्य, ज्ञान और पर्याप्त समझ नहीं हो तो उनके तथाकथित अच्छे इरादे देश और जनता के लिए भयानक सिद्ध होते हैं। उदाहरण के लिए इतिहास में मुहम्मद तुगलक का नाम बहुत प्रसिद्ध है। उसने अच्छे उद्देश्यों के साथ एक से बढ़कर एक योजनाएँ बनाई परंतु उनके क्रियान्वयन के लिए न तो उसमें बुद्धि थी, न धैर्य, न परिस्थितियों का आकलन करने की क्षमता और न ही कोई बैकअप प्लान, नतीजा उसके पूरे शासनकाल के दौरान वो खुद भी परेशान रहा और जनता भी परेशान रही।

एक सामान्य मध्यम वर्गीय परिवार में माता-पिता सोचते हैं कि उनके बच्चे अगर खूब पढ़ लिख गए, डॉक्टर, इंजीनियर या बड़े अधिकारी बन गए तो उनके बच्चों का जीवन बहुत ही अच्छा बीतेगा। बेशक उनके इरादे नेक होते हैं पर वे बच्चे की क्षमता,

उसकी अभिरुचि और परिस्थितियों का आकलन नहीं करते हैं बल्कि अपनी पसंद को बच्चे पर थोपते हैं जिसके कारण कितने ही बच्चों का बचपन छिन जाता है। आजकल के माता-पिता को एक बच्चा नहीं बल्कि एक सुपर चाइल्ड चाहिए जो उनकी हर दमित इच्छा को पूरी कर दे और समाज में उनका नाम रोशन कर सके। इसी कारण बचपन से ही हर बच्चे के ऊपर कई किलो भारी स्कूल बैग का बोझ पड़ जाता है। स्कूल की पढ़ाई, उसके बाद होमवर्क और उसके साथ ट्यूशन बच्चे के बचपन को नष्ट कर देते हैं। हर साल कई बच्चे परीक्षाओं के तनाव को झेल नहीं पाते हैं और आत्महत्या कर लेते हैं। अभिभावकों की महत्वाकांक्षा और समाज के मानक ऐसी दुर्घटनाओं के लिए जिम्मेदार हैं।

अनगिनत उदाहरण हैं जो तथाकथित नेक इरादों के पीछे छुपे अज्ञान, छल, दंभ और पाखंड को उजागर करते हैं। जब तक सही और गलत के अंतर को ठीक ढंग से समझ न लिया जाए तब तक नेक इरादे रखने के बाद भी व्यक्ति से गलतियाँ हो जाती हैं जिसका दुष्परिणाम व्यक्ति और समाज को भुगतना पड़ता है। सही और गलत की समझ आने में पूरी उम्र बीत जाती है। कुछ लोग तो 100 वर्ष की आयु पूर्ण करने पर भी समझदार नहीं हो पाते हैं। लंबी उम्र के बावजूद वे गलतफहमी में जीते हैं और गलतफहमी में ही मर जाते हैं। आज सोशल मीडिया की दुनिया में कितने ही ऐसे कट्टरपंथी मिल जाते हैं जिनका इरादा उनके हिसाब से नेक होता है परंतु परिणाम बुरा ही निकलता है। अपने कथित नेक इरादे को पूरा करने के लिए वे झूठ, अंधविश्वास, अज्ञान, नफरत और अफवाह फैलाने को भी अनुचित नहीं समझते हैं। इस तरह के आचरण से उनको लगता है कि वे अपनी जाति, नस्ल, धर्म, समाज और देश के लिए कुछ अच्छा कर रहे हैं पर ये उनका भ्रम मात्र होता है। उनके इस आचरण के कारण मात्र अज्ञान, अन्याय और झूठ की सत्ता मजबूत होती है। इस तरह के व्यक्ति, परिवार, समाज और सम्पूर्ण मानवता का अहित करते हैं।

अगर किसी योजना या बात के दुष्परिणाम से बचना है तो यह जरूरी हो जाता है कि उसके बारे में पहले पर्याप्त जानकारी अर्जित की जाए, उसके अच्छे-बुरे हर पहलू का आकलन किया जाए और एक क्षेत्र के ज्ञान को दूसरे क्षेत्र के ज्ञान, अनुभव और परिणामों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण किया जाय। अपने अहम, हठ, श्रेष्ठताबोध को किनारे रखकर, निष्पक्षता के साथ योजना के गुण और दोषों पर विस्तृत रूप से विचार किया जाए। दूसरों की राय ली जाए और योजना के गुण-दोष को गिनाने वालों को दंड के बजाय उचित सम्मान दिया जाए। जब योजना पर विस्तृत चर्चा हो जाए तभी उसे लागू किया जाए ताकि उसके दुष्परिणामों से यथासंभव बचा जा सके, अन्यथा तथाकथित 'नेक इरादा' भयानक बर्बादी का कारण भी बन सकता है।



असफलता में ही छिपी है सफलता

श्रीमती मनीषा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, (तदर्थ)



जीवन यांत्रिक हो जाए और मनुष्य शरीर बन जाए तो शायद परिणाम भले ही शानदार होंगे, पर उस सुख में शांति जाती रहेगी। आज शिक्षा और कैरियर के हर स्तर पर इस बात की तैयारी की जा रही है कि व्यक्ति कुशल हो, योग्य हो, लेकिन चीजों की तरह उपयोगी और आज्ञाकारी रहे। हर हाल में सफल होना है, यह उम्मीद हो और इसकी पूर्ति के लिए प्रयासों की पराकाष्ठा भी रहे। लेकिन असफल होने पर प्राणों की बाजी लगा देना समझदारी नहीं होगी सफलता का असली मजा वे लोग ज्यादा उठा सकेंगे, जो कभी – कभी असफल भी रहे होंगे। हर बार की सफलता खुशी कम भय ज्यादा दे जाएगी। सफलता की जिम्मेदारी यदि जाग्रत आत्मा के कंधे पर होगी तो मनुष्य मशीन होने से बच जाएगा। भौतिक समस्याओं के आध्यात्मिक उपचार करने से मनुष्य की निजता खंडित नहीं होती और जीवन यांत्रिक होने से बच जाता है।

जीवन में जड़ता नहीं होगी, बल्कि बहाव होगा गंगा के तीर की तरह। दुनिया आपको योग्य मशीन बनने के लिए मजबूर करेगी। मशीन को इससे कोई मतलब नहीं होता कि उसे चलाने और बंद करने के लिए हाथ कौन से हैं, लेकिन मनुष्य की गति को प्रोत्साहित करने के लिए और आवेग को शांत करने के लिए रिश्तों का स्पर्श जरूरी होता है। शायद इसी मशीनी मिजाज के कारण रिश्ते अपनी संवेदना खोते जा रहे हैं। तेज इनसानी दौड़ में रिश्ते बाधा और अपने लोग बोझ लगने लगते हैं। हर हाल में जीत और सुख पाने के लिए रोबोट न बनें, अपनी निजता को जानें और उसे बचाए रखें, संसार तब भी आपका उतना ही रहेगा। पर कम से कम तब आप अपने होकर और अपनी के लिए थोड़ा बहुत जी तो सकेंगे।



प्रतिरोधशीलता और चरित्र

श्री अमित सिंह, भाई,
तमन्ना (कनिष्ठ अनुवादक)



प्रतिरोधशीलता और चरित्र दो ऐसे गुण हैं जो व्यक्ति को जीवन में सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँचाते हैं। ये गुण उसकी व्यक्तिगतता और समाज के साथी द्वारा सम्मान की गरिमा को बढ़ाते हैं। प्रतिरोधशीलता का मतलब है कठिनाइयों और संघर्षों का सामना करना और चरित्र उदाहरणीय आचारशृंगार की अनुकरणीयता है।

जीवन में चुनौतियों से नहीं भागना बल्कि उनका सामना करना हमारे व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है। प्रतिरोधशीलता व्यक्ति को सब और सामर्थ्य की ऊर्जा प्रदान करती है, जिससे वह मुश्किल समयों में भी हार नहीं मानता। वह अपने लक्ष्य की दिशा में सदैव प्रगति करता है और अपार संघर्ष के बावजूद अपने उद्देश्यों को प्राप्त करता है।

एक अच्छे चरित्र का होना सभी परिस्थितियों में सहायक सिद्ध होता है। चरित्र उन आदर्शों का संचार करता है जो व्यक्ति को अच्छा इंसान बनाते हैं। यह उसके संबंधों, सामाजिक परिवेश, और समाज में उसके प्रतिस्पर्धियों के साथ व्यवहार में दिखाई देता है। एक अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति सच्चाई, ईमानदारी, सामर्थ्य, और निष्ठा के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करता है। चरित्रवान व्यक्ति को समाज में सम्मान और समर्थन का अधिकार मिलता है।

चरित्रवानता और प्रतिरोधशीलता के साथ सशक्त व्यक्ति अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिनाइयों का सामना करता है और दृढ़ संकल्प के साथ अपने मार्ग पर अग्रसर रहता है। वह अपने जीवन में आनेवाले विभिन्न परिस्थितियों से डरने की बजाय उन्हें अपने फायदे के लिए उपयोग करता है।

समय के साथ, व्यक्ति के चरित्र और प्रतिरोधशीलता में सुधार हो सकता है। सही दिशा और सही मार्गदर्शन के साथ वह इन गुणों को सँवार सकता है और सफलता की ऊँचाइयों को छु सकता है। अधिक से अधिक लोग चरित्रवान और प्रतिरोधशीलता से युक्त व्यक्तियों की प्रेरणा लें और इन गुणों को अपने जीवन में अपनाएं। समाज में ऐसे व्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जो संघर्षों और चुनौतियों का सामना करके अपने सपनों को पूरा करते हैं। वे दूसरों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बनते हैं और समाज में एक बेहतर उदाहरण स्थापित करते हैं।

चरित्रवानता और प्रतिरोधशीलता एक व्यक्ति के विकास में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। यह गुण उसे बल और साहस के साथ समस्याओं का सामना करने की शक्ति प्रदान करते हैं। जिस तरह के समय में उसके सामर्थ्य, का अनुमान नहीं होता है, उससे विभिन्न परिस्थितियों में संघर्ष करना होता है। इस संघर्ष के माध्यम से वह अपने असली सामर्थ्य को खोजता है और आत्मविश्वास की प्राप्ति करता है।

चरित्रवानता उस व्यक्ति के लिए आवश्यक है जो दृढ़ता और ईमानदारी से अपने आदर्शों का पालन करता है। यह उसके संबंधों, सामाजिक परिवेश और समाज में उसके प्रतिस्पर्धियों के साथ व्यवहार में दिखाई देता है। एक अच्छा चरित्रवान व्यक्ति सच्चाई, ईमानदारी, सामर्थ्य, और निष्ठा के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करता है। चरित्रवानता व्यक्ति को समाज में सम्मान और समर्थन का अधिकार मिलता है और लोग उससे प्रभावित होते हैं।

इस विशेषता के साथ प्रतिरोधशीलता व्यक्ति को अपने अन्दर छिपे हुए संघर्षों का सामना करने की क्षमता प्रदान करती है। यह उसे अवसरों को चुनने और उनसे सबक सीखने का सामर्थ्य प्रदान करती है। वह अपने अधीनस्थ स्थितियों को परास्त करता है और विपरीत परिस्थितियों का सामना करने में सफलता प्राप्त करता है। समर्थ चरित्र और प्रतिरोधशीलता हर व्यक्ति के लिए अपूर्व गुण होते हैं, जो उसके सफलता के पथ में मार्गदर्शक बनते हैं। इन गुणों का संचार समाज में विकसित होने चाहिए और हम सभी को इन्हें अपने जीवन में स्थान देने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे हम सभी अपने जीवन को एक उत्तम और सफल रास्ते पर चला सकते हैं और समाज को भी बेहतर बना सकते हैं।

अपना ऑफिस

श्री गुलाब सिंह
(बहुउद्देशीय कर्मी)



ए.जी. ऑफिस नाम है इसका
अव्वल दर्जे का काम है जिसका
भांति – भांति के लोग है जिसमें
अलग – अलग व्यवहार है जिनका
आसमान को छूती इमारत
नीचे बिखरा तिनका – तिनका
ऑफिस में है एक **PAG**
साथ हैं जिनके चार **DAG**
काम हैं जिनके अलग – अलग
करते फिर भी मिल – जुलकर
Sr. AO की गिनती न करें
AAO की तो करी ही न जाए
SUPERVISOR है उसके बाद
AUDITOR, CLERK उसके भी बाद
काम है सबके अलग – अलग
पर करते हैं मिल – जुलकर
SECTION जिसके बहुत सारे
नाम भी जिनके प्यारे – प्यारे
'हिंदी' का हिंदी में काम
राजभाषा को देता जो नए आयाम
'IT' करता '**COMPUTER**' से '**DEAL**'
'**PC**' में होती पैसे की अपील
'**GD**' में होती सामान्य चीजें
'**CC**' में होता सब 'गोपनीय'
'प्रशासन' का **OFFICE** पें नियंत्रण
संपदा करता **OFFICE** 'नियंत्रण'
संपदा करता **OFFICE** की देखभाल
इसके अलावा और भी है अनुभाग
जिनके भी है कई – कई भाग।



गाँव बेचकर शहर खरीदा



प्रवीण कुमार
(लेखापरीक्षक)

गाँव बेचकर शहर खरीदा, कीमत बड़ी चुकाई है।
जीवन के उल्लास बेच के, खरीदी हमने तन्हाई है।
बेचा है ईमान धरम तब, घर में शानो शौकत आई है।
संतोष बेच, तृष्णा खरीदी, देखो कितनी मंहगाई है॥

बीघा बेच स्कवायर फीट खरीदा, ये कैसी सौदाई है।
संयुक्त परिवार के वट वृक्ष से टूटी, ये पीढ़ी मुरझाई है॥
रिश्तों में है भरी चालाकी, हर बात में दिखती चतुराई है।
कहीं गुम हो गई मिठास, जीवन से, हर जगह कड़वाहट भर आई है॥

रस्सी की बुनी खाट बेच दी, मैट्रेस ने जगह बनाई है।
अचार, मुरब्बे को धकेल कर, शो केस में सजी दवाई है॥
माटी की सोंधी महक बेच के, रुम स्प्रे की खुशबू पाई है।
मिट्टी का चुल्हा बेच दिया, आज गैस पे बेस्वाद सी खीर बनाई है॥

पांच पैसे का लेमनचूस बेचा, तब कैडबरी हमने पाई है।
बेच दिया भोलापन अपना, फिर मक्कारी पाई है॥
सैलून में अब बाल कट रहे, कहाँ घूमता घर— घर नाई है।
दोपहर में अम्मा के संग, गप्प मारने क्या कोई आती चाची ताई है॥

संयुक्त परिवार के वट वृक्ष से टूटी, ये पीढ़ी मुरझाई है॥
रिश्तों में है भरी चालाकी, हर बात में दिखती चतुराई है।
कहीं गुम हो गई मिठास, जीवन से, हर जगह कड़वाहट भर आई है॥

मलाई बरफ के गोले बिक गये, तब कोक की बोतल आई है।
मिट्टी के कितने घड़े बिक गये, तब फ्रिज में ठंडक आई है ॥
खपरैल बेच फॉल्स सीलिंग खरीदा, हमने अपनी नींद उड़ाई है।
बरकत के कई दीये बुझा कर, रोशनी बल्बों में आई है॥

गोबर से लिपे फर्श बेच दिये, तब टाईल्स में चमक आई है।
देहरी से गौ माता बेची, फिर संग लेटे कुत्ते ने पूँछ हिलाई है ॥
बेच दिये संस्कार सभी, और खरीदी हमने बेहयाई है।
ब्लड प्रेशर, शुगर ने तो अब, हर घर में ली अंगड़ाई है ॥

खोखले हुए हैं रिश्ते सारे, नहीं बची उनमें सच्चाई है ॥
चमक रहे हैं बदन सभी के, दिल पे जमी गहरी काई है ॥

गाँव बेच कर शहर खरीदा, कीमत बड़ी चुकाई है ॥
जीवन के उल्लास बेच के, खरीदी हमने तन्हाई है ॥



जीवन और संगीत

श्री नरेन्द्र लाल
(बहुउद्देशीय कर्मी)



संगीत ही तो है जो
शब्दों को मधुर और सुरीला बनाता है,
कभी – कभी मन को खुशी दे जाता है,
तो कभी अपनी ही दुनिया में खो जाते हैं।
संगीत उस वक्त भी आपको संभाल लेता है
जब आप टूटकर बिखरने वाले होते हैं,
जब व्यक्ति संगीत में खो जाता है।
तो वो जीते-जी मोक्ष पा लेता है।
पक्षियों की चहाचहाट में छुपा है, संगीत
सुखे पत्तों की सरसराहट में छुपा है, संगीत
गिरते हुए झरने के पानी में छुपा है, संगीत
नदियों के बहते पानी में छुपा है, संगीत
जीवन के दुख – सुख में है संगीत
एक अकेले इंसान के लिये सुकून है, संगीत
सात – सुर ना हो तो फिका है संगीत
ऐसी सुरीली दास्ताँ जिसका नाम है संगीत।
संगीत ही जीवन है।
संगीत ही गगन है।
संगीत हमारे रूह को छुए
संगीत से हम 'खूबसूरत' सुर हुए
ऐसी सुरीली दास्ताँ है, संगीत।।

जीवन साथी

श्रीमती अनिता,
पत्नी, श्री गुलाब सिंह
(बहुउद्देशीय कर्मी)



डोर जीवन की तुझसे ही है
चहुँ ओर खुशियाँ तुझसे ही हैं
पल – पल जीवन चलता जाता
इसका चलना तुझसे ही है।।
पग – पग जीवन गाता जाता
इसका गाना तुझसे ही हैं
बसंत हो चाहे पतझड़
हर मौसम अब तुझसे ही है
हमेशा आगे बढ़ते रहना
इसका बढ़ना तुझसे ही है।
जीवन एक खुशियों का पिटारा
इसमें खुशियाँ तुझसे ही हैं
खुशी – खुशी कट जाए जीवन
इसमें खुशियाँ तुझसे ही हैं
शांति भरा ये वातावरण
इसमें शांति तुझसे ही है
जीवन की डोर तुझसे ही है।।



मनुष्य की भूख

श्री अरुण यादव
(लेखापरीक्षक)



प्रकृति ने दुनिया को सजाया
नदी, पहाड़, झरना
पेड़ – पौधे फूल तितली
और बहुत से विविध प्राणियों से।
सबने मिलकर दुनिया को
खूबसूरत बनाया।
मनुष्य दुनिया की हर खूबसूरत
चीज खा जायेगा
फिर मनुष्य के पास बचेगी केवल उसकी भूख
और फिर वो भूख मनुष्य को खा जाएगी
फिर न ये दुनिया बचेगी, न मनुष्य बचेगा, न
मनुष्य की भूख बचेगी



फिर एक दिन प्रकृति ने मनुष्य
बना दिया
फिर मनुष्य ने अपनी भूख ऐसी बढ़ाई
कि उसने निगलना शुरू कर दिया है
दुनिया की हर खूबसूरत चीज को।
मुझे लगता है
एक दिन ऐसा आएगा जब
मनुष्य दुनिया की हर खूबसूरत
चीज खा जायेगा
फिर मनुष्य के पास बचेगी केवल उसकी भूख
और फिर वो भूख मनुष्य को खा जाएगी
फिर न ये दुनिया बचेगी, न मनुष्य बचेगा, न
मनुष्य की भूख बचेगी।।

हार नहीं स्वीकार

श्री कमलकान्त पाण्डेय
(लेखापरीक्षक)



हार नहीं स्वीकार

मस्तक का झुकना नहीं अंगीकार
प्राणों में जब तक स्पन्दन
रक्त के बूंदों में जब तक लालिमा

हार नहीं स्वीकार

शत्रु के हृदय को कंपित करती रहेगी यह ललकार

हार नहीं स्वीकार

मस्तक का झुकना नहीं अंगीकार।

शत्रु का दल हो भयंकर,
षडयंत्रों का हो अम्बर

हम विजय तिलक लगाकर, लड़ने को तैयार,

हार नहीं स्वीकार,

मस्तक का झुकना नहीं अंगीकार।

विजयपथ के कटकांकीर्ण, मार्ग पर,
रक्तरंजित पदचिन्हों से चलने को हम तैयार

हार नहीं स्वीकार,

मस्तक का झुकना नहीं अंगीकार,

जौहर के अंगारों को,

चित्तौड़ दुर्ग के पहाड़ों को

कारगिल, गलवान के शहीदों को

खून से सनी जालियाँवाला बाग की मिट्टी को

हार नहीं स्वीकार,

मस्तक का झुकना नहीं अंगीकार

आराम कहाँ विश्राम कहाँ

जग जीवन में जिसके रण संग्राम जहाँ

शांति के लिए युद्ध अनिवार्य

आतंकवाद, साम्राज्यवाद का हम करते हैं प्रतीकार

हार नहीं स्वीकार,

मस्तक का झुकना नहीं अंगीकार

आघात क्या, प्रतिघात क्या

रण की भेरी फूँक दी

फिर मृत्यु का संवाद क्या ?

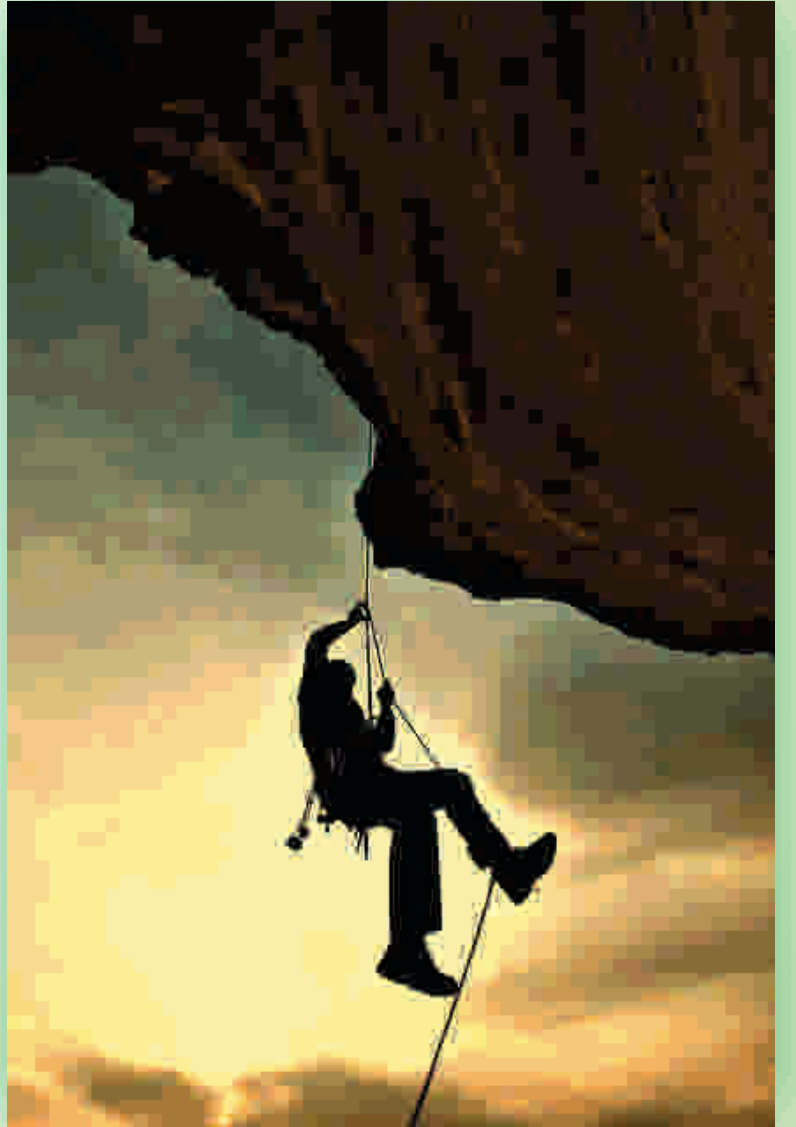
हाहाकार क्या ?

ललकार क्या ?

नरसंहार क्या ? रक्तपात क्या?

जीवन की परिभाषा, अमर्त्य आशा

क्षणभंगुर जीवन का क्या मरण ,



युद्ध का हाहाकार
जीवन का नरसंहार
शत्रु की ललकार
सिंह की हुंकार
धनुष की टंकार
विजय के आवाहन को अर्पित
समर्पित यह जीवन
हार नहीं स्वीकार,
मस्तक का झुकना नहीं अंगीकार
पराक्रम के भाल से
रक्तरंजित लहू – लुहान से
वक्षः स्थल के भाल से
कटिबद्ध, दृढ़ – प्रतिज्ञा
जो अस्त हुए हमारे उदय के लिए
उन्हे हार नहीं स्वीकार,
मस्तक का झुकना नहीं अंगीकार
हमने कभी नहीं की याचना
युद्ध अनिवार्य केवल शांति की स्थापना
आघातों को सहकार कितने पत्थर टूटे होंगे ,
आघातों को सहकर हमने हृदय वज्र सा बनाया है
आघातों से प्रतिघातों से
किंचित कुछ विचलित बातों से
जहां मरण उत्सव बलिदान परंपरा
उस विजयपथ के पथिक को ,
हार नहीं स्वीकार,
मस्तक का झुकना नहीं अंगीकार ।।



कृष्णांजली

श्रीमती वैजयंती पाण्डेय, माता,
श्री कमलकान्त पाण्डेय
(लेखापरीक्षक)



मैं नित सोऊँ जीवन खोऊँ
नहीं रखी हृदय छवि हृदय तुम्हारी
गिरधारी मेरे वादक
मैं बँसी तुम्हारी
तुम्हारे अधरो के फूँक से बजे ये जीवन बंसी
गिरधारी मेरे माधव मुरारी
रख दो कर अपने, मेरे सर
नहीं माँगू नश्वर – दृवर
हृदय बसे छवि तुम्हारी
हृदय के वृन्दावन में, विराजो गिरधारी
अंतर के दोष, काम, क्रोध
कर सबका मर्दन
तोड़ कर गर्व की मटकी, छाछ रस सुधा पान करो
हरण कर अज्ञान, हृदय धरो कौस्तुव मणि।
योगक्षेम का कर धारण, गोवर्धन गिरधारी
गीतामृत के कर्मयोग ज्ञान हेतु, हृदय आभारी
रसना केवल जपे कृष्णा
वन्दु मैं जगतगुरु मुरारी
गिरधारी मेरे वादक मैं बंसी तुम्हारी
(मेरे आराध्य श्रीकृष्णचन्द्र के करकमलों में समर्पित)

कौस्तुव मणि :- एक प्रकार की मणि जिसे श्री विष्णु अपने हृदयस्थल पर धारण करते हैं

(पुराण अनुसार)

योगक्षेम - अभाव की पूर्ति करना तथा प्राप्त वस्तु की रक्षा करना।

➤ हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

डॉ. संपूर्णा

मौजूदा समाजिक परिदृश्य: स्त्री शक्ति की उच्चता

तमन्ना
(कनिष्ठ अनुवादक)



आधुनिक भारत में, समाज की धरोहर में कायम रहने वाली सबसे महत्वपूर्ण विषयों में से एक है स्त्री शक्ति की उच्चता। यह एक विषय है जो सभी लोगों को संबोधित करता है, क्योंकि समाज के सभी पहलुओं में स्त्रियों का महत्वपूर्ण योगदान है। आधुनिक समय में, स्त्रियों को समाज में सम्मानित करने के लिए बहुत से सुधार हुए हैं, लेकिन इस दिशा में अभी भी काम बाकी है। समाज के इस महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा करते हुए, हम देखते हैं कि महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, नियंत्रण, और समाज में उच्चता दिलाने के लिए उच्चतम प्रयास किए जा रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियों को समर्थन और अधिकार प्राप्त होने के लिए नई सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं ताकि वे अपने विचारों और प्रतिभा को समर्थन के साथ व्यक्त कर सकें।

व्यापार और नौकरी के क्षेत्र में, स्त्रियों को समान अवसर मिलने के लिए सुधार किए जा रहे हैं। कंपनियों और सरकारी संस्थानों में, स्त्रियों को ऊंचे पदों पर प्रोत्साहित किया जा रहा है और उन्हें समान वेतन और अनुदान के लिए समर्थित किया जा रहा है। समाज में स्त्री शक्ति की उच्चता के लिए और भी कदम उठाए जा रहे हैं जैसे कि महिला सुरक्षा के क्षेत्र में सुधार, स्त्रियों के समाजिक हकों के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए अभियान और स्त्री उत्थान के लिए सरकारी योजनाएं। इन सभी प्रयासों के माध्यम से, समाज में स्त्रियों के प्रति सम्मान और समर्थन में सुधार हो रहा है।

इस विषय पर अंततः कहना चाहूंगी कि समाज में स्त्री शक्ति की उच्चता के लिए अभी भी काम की जरूरत है। सभी वर्गों के लोगों को मिलकर महिलाओं को समाज में उच्चता और सम्मान का मानवीय अधिकार दिलाने के लिए एक साथ काम करना होगा। यह समझना होगा कि समाज की उन्नति के लिए स्त्री शक्ति की उच्चता को बढ़ावा देना आवश्यक है।

साँसें

श्री गोपाल दत्त
(बहुउद्देशीय कर्मी)



गिनी हुई साँसें तेरी ऐ मानव, मत कर तू इतना अभिमान।

कर ले तू कुछ नेक काम, मत कर तू इतना अभिमान।।

मत उलझ इन फसादों में, जिनका कोई सरोकार नहीं।

पल-पल की खबर उसे है, भूल मत कर बैठना कहीं।।

कर्ज तुझ पर इस माटी का बहुत है

पाला – पोसा जिसने तुझे और बनाया इंसान है।।

याद कर उन वीरों को, माँ भारती के उन सपूतों को,

प्राण जिन्होंने दिये हँसते-हँसते इस माटी की रक्षा को

जगा अपने अन्तर्मन को, अब भी कर ले तू कुछ नेक काम

मनुष्य जन्म तो अनमोल है, फिर न मिलेगा ऐसा धाम।।

ऋषि मुनियों की ये भूमि है, वीरों की है ये धरा।

भारतवर्ष जिसका नाम है, रणबांकुरों की है ये वसुंधरा

गिनी है ये साँसें तेरी ऐ मानव, मत कर तू इतना अभिमान।

कर ले तू कुछ नेक काम मत कर तू इतना अभिमान।।

हमारी धरती

आराध्या मिश्रा
सुपुत्री श्री मधुकर मिश्रा
(सहायक पर्यवेक्षक)



हमारी धरती हमारी माता
हमारी धरती हमारी माता
उनमें बसी है दुनिया सारी
हम करें उनकी पूजा
उनमें बसी है नदियाँ सारी और हरियाली
जिनसे मिलता है हमें शुद्ध पानी
बाग – बगीचें फूल – पौधें हैं
मनुष्य और जानवर भी रहते हैं
हमारी धरती हमारी माता
उनकी रक्षा हमारा कर्तव्य
हम करते हैं उनसे प्यार
हमारी धरती हमारी माता ।।

हरिद्वार, (देव भूमि के दर्शन)

श्री लक्ष्मण सिंह रावत
(लेखापरीक्षक)



आज हम आपको ले चलते हैं देव भूमि हरिद्वार जहाँ से पतित पावन, पाप नाशनी गंगा पर्वतों को छोड़ धरती पर आती है। इस शहर की हवा में सोंधी सी खुशबू है। दूर से दिखते अडिग पर्वत, कलकल कर के बहती पवित्र गंगा, दूर दूर से आए श्रद्धालु और चारों ओर गूँजते गंगा मईया के जयकारे। ये रमणीय दृश्ये आँखों के द्वार से होता हुआ सीधा मन में बस जाता है।

यहाँ हर रोज एक त्योहार होता है। माँ गंगा का त्योहार! सूर्योदय के स्नान से लेकर शाम की आरती तक हर एक क्षण एक त्योहार है। हर रोज हजारों श्रद्धालु देश के कोने-कोने से यहाँ गंगा दर्शन के लिए आते हैं और गंगा में स्नान कर के जन्म-जन्म के पापों से मुक्त हो जाते हैं। देव भूमि हरिद्वार में कई अति मनोरम मंदिर व दर्शनीय स्थल हैं। यहाँ के बाजार बड़े लुभावने हैं। हर तरफ रोशनी है, रौनक है। खाने के शौकीन लोगों को हरिद्वार बिल्कुल भी निराश नहीं करता, यहाँ स्वादिष्ट पकवानों की खूब सुन्दर दुकाने सुबह ही सज जाती है। पूजा की सामग्री व हिन्दू धार्मिक किताबों की भी बहुत सी दुकाने हैं। भारत के हर प्रांत के लोग यहाँ आते हैं और गंगा जी के पवित्र जल को बोतलों में भर कर अपने साथ ले जाते हैं। गंगा घाट व बाजारों में रंग बिरंगी बोतलों से सजी दुकाने देखी जा सकती हैं। दूर दराज से आये यात्री गंगा के पावन जल में स्नान कर के अपनी सारी थकान भूल जाते हैं और हर-हर गंगे के जाप करते हुए इस नगरी के मनमोहक दृश्यों को अपने मन में समेट लेते हैं। सायं काल की आरती का दृश्य बड़ा ही मनोरम होता होता है। श्रद्धालु आरती देखने के लिए गंगा घाट पर बनी सीढ़ियों पर बैठ जाते हैं। गंगा जल में दिखती आरती की अग्नि की ज्वालायें यूँ लगती हैं जैसे सेंकड़ों दीपक गंगा जल में डुबकियां लगा रहे हों। गंगा मंदिर के नीचे बनी सीढ़ियों को हर की पौड़ी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है की सागर मंथन के समय के अमृत की कुछ बुँदे यहाँ गिरी थी इसी स्थान को ब्रह्म कुंड कहते हैं तथा ग्रंथों में यहाँ स्नान करने की बड़ी महिमा कही गयी है। ब्रह्म कुण्ड से थोड़ा आगे अस्थि विसर्जन घाट है।

हर की पौड़ी व ब्रह्म कुंड



हरिद्वार की शिवालिक पहाड़ियों की बिल्व पर्वत पर स्थित है माता मनसा का यह मंदिर। यह महा शक्ति के उस रूप का है जो सबके मन की इच्छाएँ पूरी करती है इसलिए उनका नाम मनसा देवी पड़ा है। हर की पौड़ी से कुछ 800 मीटर की दुरी पर मनसा देवी अपने भक्तों की मनोकामनाएँ पूरी करने के लिए सुशोभित है। मनसा देवी जाने के दो रास्ते हैं, एक पैदल यात्रा का और दूसरा उड़न खटोले के द्वारा।

उड़न खटोला

उड़न खटोला की टिकट 233/— रुपये मात्र है। इस टिकट में दोनों देवियों के उड़न खटोले द्वारा दर्शन, उड़न खटोले द्वारा वापिसी, मनसा देवी से चंडी देवी ट्रांसपोर्ट शुल्क तथा चंडी देवी से वापिसी का ट्रांसपोर्ट शुल्क सम्मिलित है।

माँ मनसा देवी मंदिर

मनसा देवी मंदिर से 3 कि. मी. दूर स्थित है चंडी देवी मंदिर। यह मंदिर माँ शक्ति के चण्डिका रूप को समर्पित है। चंडी देवी दर्शन के लिए आप पैदल यात्रा कर सकते हैं या उड़न खटोले में बैठ कर पूरे हरिद्वार को देखते हुए माँ के दरबार में पहुंच सकते हैं। यह मंदिर नील पर्वत की पहाड़ियों पर स्थित है। इस पर्वत के पास से बहने वाली गंगा की धारा को नील गंगा कहा जाता है। चंडी देवी के मंदिर से हरिद्वार नगरी का बड़ा सुन्दर दृश्य दिखता है। इन पर्वतों पर माता के जय कारे निरंतर गूंजते रहते हैं। देवी के इन दोनों ही मंदिरों में दर्शन श्रद्धालुओं की लम्बी कतारे लगती हैं।

अन्य मंदिर

हरिद्वार में न जाने कितने ही मंदिर हैं, सबकी अपनी अपनी महिमा है। इन में से कुछ हैं माया देवी मंदिर जो की माया देवी को समर्पित है, दक्ष महादेव मंदिर, जो भगवान शिव को समर्पित है और कहा जाता है की यहीं पर दक्ष प्रजापति ने वह यज्ञ किया था जिस में महादेव को आमंत्रित न करने पर तथा यज्ञ स्थल पर शिव का अपमान किये जाने से देवी सती अपने पिता दक्ष पर क्रोधित हो कर यज्ञ की अग्नि में देह त्याग कर दिया था। भारत माता मंदिर जो की आधुनिक युग का एक मंदिर है। यह एक आठ मंजिला भव्य मंदिर है।



पॉलीथीन बैन: सिर्फ दिखावा



श्री संदीप चौधरी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

पिछले कुछ वर्षों से देख रहा हूँ कि प्रति वर्ष कुछ दिनों के लिए पर्यावरण को बचाने के लिए तथाकथित पर्यावरण प्रेमी सरकार द्वारा एक मुहिम बड़े जोरों शोरों से चलायी जाती है, जिसको कहते हैं एकल उपयोग प्लास्टिक पर बैन। इस मुहिम में जो सबसे निशाने पर होती है, वो है बेचारी पॉलीथीन की थैली। बेचारी पॉलीथीन की थैली भी सोचती होगी कि मुझमें ऐसी कौन — सी बुराई है जो मुझे पर्यावरण के लिए इतना कोसा जाता है, शायद मेरा रंग इतना रंग — बिरंगा नहीं है, जितना कि रैडिमेड पैकिंग वाली पॉलीथीन का। शायद ये भी हो सकता है कि मेरा उपयोग रेड़ी लगाकर सब्जी बेचने वाला, फल बेचने वाला या राशन की दुकान वाला आटा, चावल, दाल, चीनी जैसी साधारण सी वस्तुओं की पैकिंग करने में करता है और इन वस्तुओं को बेचने वाले और खरीदने वाले अधिकतर साधारण आदमी ही होते हैं, जो शायद पर्यावरण प्रेमी नहीं होते होंगे। इस कारण ही शायद मुझे इतना कोसा जाता है, और बेचारी सोच भी क्या सकती है।

मेरा एक मित्र है, जो बहुत बड़ा पर्यावरण प्रेमी है एवं पॉलीथीन के उपयोग के सख्त खिलाफ रहता है। वो व्यक्ति नियमित तौर पर रिलायंस मार्ट से घर का राशन पानी लेने जाता है, उस मार्ट में लगभग सभी वस्तुओं की रैडिमेड पैकिंग पॉलीथीन में होती है और वो व्यक्ति बड़े शान से उन सब वस्तुओं को खरीदता है और अपने साथ ले गए एक बड़े कपड़े के थैले में उस सामान को रखकर मार्ट से बाहर निकलता है और सीना चौड़ा करके एहसास करता है कि मैं कितना पर्यावरण प्रेमी हूँ, मैंने कपड़े के थैले का उपयोग किया है। लेकिन वो पर्यावरण प्रेमी ये कभी नहीं सोचता कि उसके कपड़े के थैले के अंदर जो भी सामान है, उस सबकी पैकिंग पॉलीथीन में ही है। परंतु, जब भी वह किसी व्यक्ति को सब्जी, फल, राशन जैसा सामान पॉलीथीन की थैली में ले जाते हुए देखता है तो परेशान होकर कहता है कि पता नहीं ये लोग कब सुधरेंगे, इनको पर्यावरण की कोई परवाह नहीं है।

अब मेरे एक बात ये समझ नहीं आती कि एक व्यक्ति कपड़े के थैले में सामान लेकर आता है और दूसरा व्यक्ति पॉलीथीन थैली में सामान लेके आता है, जबकि दोनों के थैलों में सब कुछ प्लास्टिक एवं रैडिमेड पॉलीथीन पैकिंग वाले सामान हैं, तो क्या सिर्फ थैले के अन्तर से ही पता लगता है कि कौन पर्यावरण प्रेमी है और क्या बस कपड़े के थैले के उपयोग करने से हमारा पर्यावरण बच जाएगा।

सरकार को यदि पॉलीथीन की थैली ही पर्यावरण के लिए खतरा दिखाई देती है, तो वो दिखावा ही लगता है, क्योंकि आजकल लगभग सभी वस्तुएं रैडिमेड पॉलीथीन पैकिंग के साथ बाजार में उपलब्ध हैं। यदि हमारी सरकार सच में पर्यावरण प्रेमी है तो, सबसे पहले सरकार को रैडिमेड पॉलीथीन पैकिंग के विकल्प के रूप में पर्यावरण अनुकूल पैकिंग का उपाय ढूँढना होगा। इसके साथ-साथ एकल उपयोग प्लास्टिक के निपटान एवं पुनर्चक्रण का पर्यावरण अनुकूल प्रभावी उपाय ढूँढना होगा, सिर्फ पॉलीथीन थैली के उपयोग के लिए कुछ गरीब सब्जी-फल विक्रेताओं के चालान काटने से कुछ नहीं होने वाला है।



प्यारी बिटिया

श्री कुलदीप
(बहुउद्देशीय कर्मी)



प्यारी मेरी बिटिया
तू है न्यारी मेरी बिटिया
दुलारी मेरी बिटिया
प्यारी – प्यारी मेरी बिटिया
जब – जब मैंने पुकारा तुझे बिटिया
दौड कर तू मेरे पास आई है बिटिया ।।
तेरा हँसना मुझे हँसाता है
तेरा रोना मुझे रूलाता है
जब – जब भी तू हँसती है
तेरा हँसना मुझे हँसाता है
तू हँसती रहे हमेशा
तू गाती रहे हमेशा
जब – जब भी तू गाती है
तेरा गाना प्यारा लगता है तेरे पापा को प्यारा लगता
है ।।
तेरे पापा को प्यार है तुझसे
बहुत – ही ज्यादा दुलार है तुझसे
जब – जब भी तू चलती है
तेरा चलना अच्छा लगता है
तेरा गाना अच्छा लगता



लावी पुत्री

भारतीय भिन्नता

रेशू चौधरी

(आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक)



भारत एक ऐसा देश है जिसे विविधता और भिन्नता से समृद्ध किया गया है। यह एक ऐसा संसारिक राष्ट्र है जिसमें विभिन्न धर्म, भाषा, संस्कृति, स्थानीय रीति-रिवाज आदि एक साथ असली भारतीयता का परिचय देते हैं। इस विविधता के साथ भारत को “एकता में विभिन्नता” का देश कहा जाता है। पहले हम धर्म की भिन्नता की ओर देखें। भारत विश्व के प्रमुख धर्मों का निवास स्थल है। हिन्दू धर्म, इस्लाम, सिख धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, ईसाई धर्म और अन्य अनेक धर्म यहाँ के नागरिकों द्वारा अपनाए जाते हैं। यहां के लोग अपने धर्म अनुसार धार्मिक कार्यक्रमों और धार्मिक उत्सवों को बड़े धूमधाम से मनाते हैं। धर्म के संबंध में समझौता और सहयोग के मामले में भी भारत विश्व में उदाहरणीय है।

भाषाओं की भिन्नता भी भारत के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है। भारत में विभिन्न राज्यों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। हिंदी राजभाषा है, जो राष्ट्रीय स्तर पर अधिकृत भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है, लेकिन अनेक राज्यों में अपनी अलग-अलग भाषाएँ भी हैं। भारतीय भाषाएँ विभिन्न शैलियों, व्याकरण और व्यंजनों में समृद्ध हैं और इससे हमारे भाषाई संसाधनों की भरमार होती है।

संस्कृति और लोक संस्कृति के क्षेत्र में भी भारतीय भिन्नता अद्भुत है। प्रत्येक राज्य और क्षेत्र में अपनी-अपनी विशेष संस्कृति है जिसमें स्थानीय संस्कृति, कला, साहित्य, संगीत, नृत्य, और रीति-रिवाज शामिल होते हैं। विभिन्न राज्यों के त्यौहार एवं व्रत, और पर्व भी उनकी विशेषता को दर्शाते हैं और लोग उन्हें उत्साह से मनाते हैं।

भारतीय भिन्नता उसके विभिन्न भू-भागों की अलग-अलग जलवायु, भूगोल, और प्राकृतिक संसाधनों में भी दिखती है। हिमालय से लेकर दक्षिण के समुद्र तट तक विभिन्न भू-भागों में प्राकृतिक सौंदर्य अपार है इसके अलावा भारत विविधता से भरा हुआ वन्य जीवन, बागवानी, खेती, और उत्पादन में भी विशेषता रखता है। इन सभी क्षेत्रों में विभिन्न राज्यों के लोग अपने रूप, रंग, और भोजन की अलग-अलग पहचान रखते हैं।

भारत की भिन्नता एक सामाजिक और आर्थिक संरचना में भी दिखाई देती है। यहां विभिन्न जातियों, धर्मों, भाषाओं, और क्षेत्रों के लोग एक साथ निवास करते हैं। वे अपने समाजों और समुदायों में सामाजिक समरसता और सद्भावना के साथ रहते हैं। इसके साथ ही, भारत में अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भी भिन्नता है। इस देश में गाँवों में कृषि, उद्योग क्षेत्र में उद्यमिता और शहरों में सेवा क्षेत्र में संघर्ष के लिए विभिन्न लोग एक साथ काम करते हैं।

भारतीय भिन्नता के माध्यम से यह देश अपनी सजीवता और उत्थान के पथ पर अग्रसर रहता है। विभिन्न भाषाएँ, संस्कृतियाँ, और धर्मों के लोग एक साथ मिलकर राष्ट्रीय एकता और विकास के मार्ग पर अग्रसर रहते हैं। भारतीय भिन्नता एक शक्ति के रूप में काम करती है जो राष्ट्र को समृद्धि और समाज की उन्नति की दिशा में अग्रसर करती है।

इसलिए, हम कह सकते हैं कि भारतीय भिन्नता उसकी सबसे अमूल्य धरोहर है जो इसे एक अद्भुत और अनूठे देश के रूप में विश्वासयोग्य बनाती है। भारतीय भिन्नता को समझने और सम्मान करने के माध्यम से हम सभी एक समृद्ध और समरस भारत का निर्माण कर सकते हैं।



भाषा

श्रीमती निशा पाण्डेय
(लेखापरीक्षक)



एक सरस, सतत सलिला है
तटबंधो के मध्य
अविच्छिन्न, अप्रतिहत, अनिरुद्ध
किंतु नितरां, प्रवाहमान
अहर्निश, अनाघनन्त, दिगना
न बाँध सका कोई उसकी धारा को
और न चला सका है इशारों पर
समेटे हुए है जो अपने आगोश में
मधुरिमा और मिट्टी को सुगन्ध
भाषा
जननी है, माँ है, अपनापन है
जोड़ती है, पिरोती है, बांधती है
संस्कृति, अस्मिता और इतिहास को साझे सूत्र में, जैसे कोई
बाधयंत्र
सरगम की धुन में घोल देता
सुर, लय और छंद।
नयी इबारत
लोग जो होते हैं
वो होते नहीं
सियासत में लोग
उसूलों के होते नहीं
एक बेचारे आदमी अपनी किस्मत लेकर
कहाँ जाएँ
सिर्फ सोचते रहने से भी
कुछ होता नहीं
आदमी का सोचा
कुछ भी होता नहीं
ये पत्थर की मूरत भी
चुप रहती है
दुआओं से भी
कुछ होता नहीं
इस सादा जीवन में

एक अदद उम्मीद के सहारे
जीकर मर जाने से
कुछ होता नहीं
मरने के बाद भी
जन्नत की खाक
नसीब होता नहीं
अब हाथों की लकीरों को
धुरते रहने से भी क्या होगा
मसीहा भी अब कोई

नही आयेगा
तुम जो भी करोगे
अब खुद ही करोगे
अब तुम उठोगे
पूरी ताकत और ईमान से
आँखों में मशाल जलाकर
और मुट्टियों को भींचकर
अब तुम लिखोगे साजिशों की जालिम दीवार पर
एक नयी इबारत ।



आज के समय में सोशल मीडिया

श्रीमती आकांक्षा शर्मा
(बहुउद्देशीय कर्मी)



कहा जाता है कि सूचना दो धारी तलवार की तरह होती है। एक ओर इसका उपयोग भ्रम और क्रूरता फैलाने में किया जाता है, तो दूसरी ओर रचनात्मक कार्यों में भी किया जा सकता है। सूचना क्रांति के इस आधुनिक दौर में सोशल मीडिया की भूमिका को लेकर हमेशा सवाल उठते रहे हैं। प्रतिदिन कई बिलियन लोग फेसबुक पर लॉग इन करते हैं। हर सेकेंड ट्विटर पर ट्वीट किए जाते हैं और इंस्टाग्राम पर कई तस्वीरें पोस्ट की जाती हैं।

इस प्रकार हम पाते हैं कि सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण लोगों के सोचने का दायरा संकुचित होता जा रहा है जो न केवल मतदान के समय व्यवहार में परिवर्तन लाता है बल्कि हर रोज व्यक्तिगत वार्ताओं को भी प्रभावित कर रहा है। हाल ही में बद्रीनाथ, केदारनाथ मंदिर समिति ने केदारनाथ मंदिर के अंदर फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी पर प्रतिबंध लगा दिया है। कुछ दिनों पहले एक महिला ब्लॉगर ने मंदिर के सामने अपने प्रेमी को प्रपोज किया था। वीडियो वायरल होने के बाद मंदिर प्रशासन ने नाराजगी जाहिर की थी।

आजकल सोशल मीडिया पर ब्लॉगिंग काफी प्रचलन में है। लोग यू – ट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम ट्विटर पर अपनी वीडियो साझा करते हैं। आज के वक्त में कई ऐसे ब्लॉगर हैं जो लॉग – इन के माध्यम से पूरी दुनिया को बहुत ही अच्छी शिक्षा से संबंधित विषयों पर वीडियो दे रहे हैं। कुछ अपने कार्यक्षेत्र के स्किल को लोगों के साथ साझा कर रहे हैं, किसी के पास कोई हुनर है तो उस हुनर को ही ब्लॉगिंग के माध्यम से लोगों तक पहुँचा रहे हैं।

परंतु कुछ लोग सोशल मीडिया से इतने प्रभावित हैं कि वह दूसरे लोगों की ब्लॉगिंग देखकर खुद भी ब्लॉगिंग करने का प्रयास करते हैं, नई जगह पर जाते हैं और अपनी घर परिवार की जिम्मेदारियों को भूलकर गलत राह की ओर जा रहे हैं। बच्चे छोटी उम्र से ही फोन और इंटरनेट के आदी हो गए हैं और ज्ञान की किताब छोड़कर इंटरनेट पर वीडियो देखना पसंद करते हैं। अतः मेरी समझ से ब्लॉगिंग देखना और करना गलत नहीं परंतु यह ज्ञानवर्धक हो और सही कार्य की तरह किया जाए।

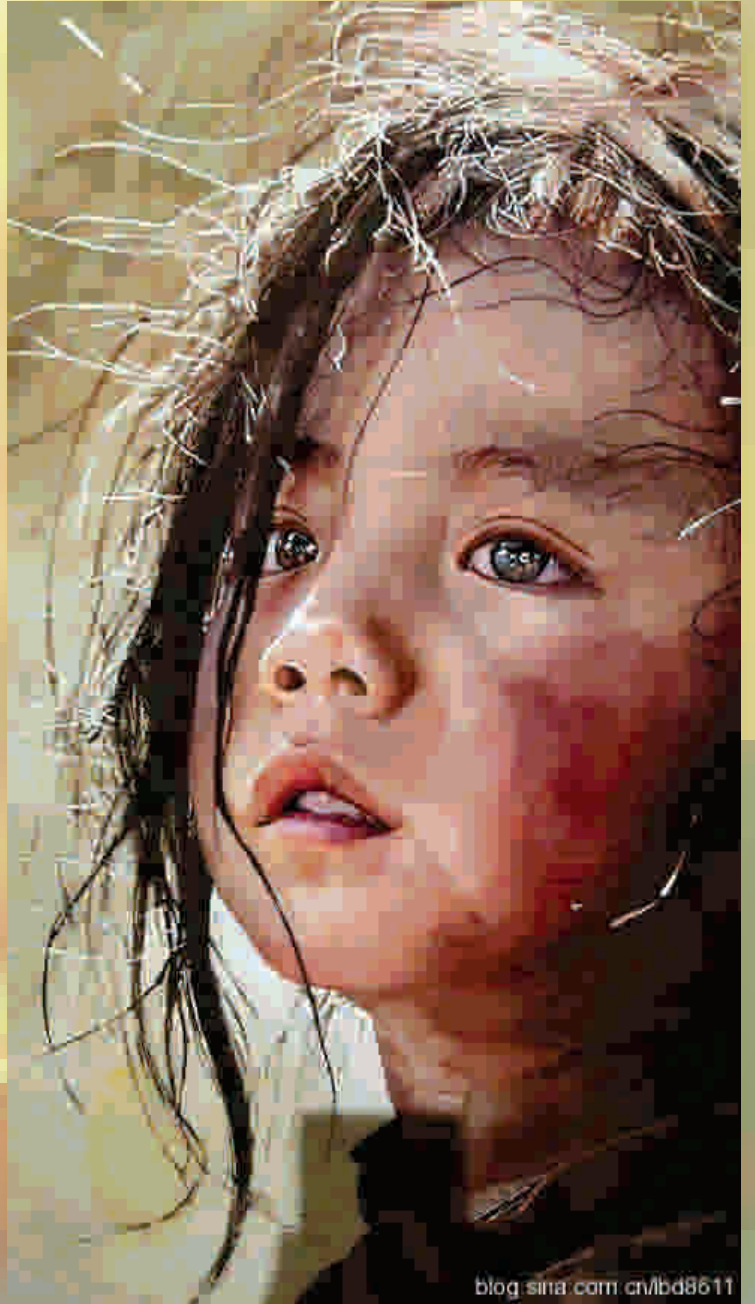
SOCIAL MEDIA

भीख और भूख

श्री विजय
(बहुउद्देशीय कर्मी)



एक चौराहा... और सड़क का किनारा था।
एक छोटी लड़की खड़ी बगल में
साथ खम्बे का सहारा था।
आँखें उसकी मोटी कद छोटा था।
कपड़ा उसका फटा पुराना था।
बाल भूरा उसका रंग गोरा था।
उस पर माटी का छाप थोड़ा था
क्यों खड़ी थी क्या उसे पाना था
दृश्य है लखनऊ स्टेशन का
जहाँ मूक दर्शकों का आना – जाना था।
चंद पैसों से खनखनाता
एक हाथ में कटोरा था।
नंगे पांव में छाले पड़े थे
दूसरे हाथ में हथौड़ा था।
भूख की मार झेल रही थी
छोटी उम्र में घर छोड़ा था।
उसे तो मेहनत से कुछ कमाना था।
दृश्य है लखनऊ स्टेशन का
जहाँ मूक दर्शकों का आना – जाना था।
भीख न मिलेगी उसे पता था
भूख न मिटेगी उसे पता था
दूसरे हाथ के हथौड़े से
ना जाने कितने पत्थर तोड़ा था
कर या मर की हालात न
बाल मजदूर बनाकर छोड़ा था
भूखे पेट का दर्द किसने जाना था
दृश्य है लखनऊ स्टेशन का
जहाँ मूक दर्शकों का आना – जाना था
दिन ढला शाम होगी
रात होने में थोड़ा था।
थक गई निगाहें अब तो
हिम्मत ने भी साथ छोड़ा था।
शायद किस्मत उसकी बुरी थी
और लोगों में मुँह मोड़ा था।
उसे तो बस... पेट की भूख मिटाना था
दृश्य है लखनऊ स्टेशन का।
जहाँ मूक दर्शकों का आना – जाना था
थक कर चूर गिर पड़ी
हाथ से गिरा हथौड़ा था



blog.sina.com.cn/lbd8611

गिरते हुए को न थामा किसी ने
बचपन में... पिता ने साथ छोड़ा था
न भीख मिली न भूख मिटी
अभी भी खाली कटोरा था
उसे जीने के लिए कुछ तो खाना था
दृश्य है लखनऊ स्टेशन का
जहाँ मूक दर्शकों का आना – जाना था।
एक इंसान था पास में
हाथ में... खाना लेकर खड़ा था।
फेंका उसने खाना बगल में
जहाँ कचरे का ढेर पड़ा था।
लालसा भी आँखों से देख
खुशी से वह दौड़ पड़ी थी।
जी भर के खायेगी आज
वह ढेर पर टूट पड़ी थी.
लोगों की परवाह ही क्यों उसे
उसके लिए तो भूख बड़ी थी।
उसे भी तो कल काम पर जाना था
दृश्य नहीं केवल लखनऊ स्टेशन का
हर जगह मूक दर्शकों का आना – जाना था।



इंसान (एक अनोखी रचना)

श्री महाबीर सिंह
(बहुउद्देशीय कर्मी)



इस धरा पर अतुल रचना है अगोचर ने रची। इंसान का पंजर बनाकर श्वास उसमें है भरी ॥

हर अंश को ऐसे तराशा कला अदभुत है दिखी। हर जरूरत देखकर हर अंग की रचना करी ॥

इस धरा पर उसमें है भरी ॥

कर्म करने को भुजा दी, देखने को दृग दी। पंथ पर परिचलन करने को चरण की भेंट दी ॥

सुनने को कर्ण हैं व सूंघने की शक्ति दी। विचारों को व्यक्त करने को हमें आवाज दी ॥

इस धरा पर उसमें है भरी ॥

सबसे अनोखे रूप से कपाल की रचना करी। हड्डियों के दुर्ग में विवेक की संपत्ति भरी ॥

इंसान की रचना करी। इंसान की रचना करी ॥

इस धरा पर उसमें है भरी ॥

विवेक से इंसान में नव चेतना आने लगी। हर रोज कुछ नूतन करें मानव की ये आदत बनी ॥

विवेक से इंसान ने हर चैन – सुख खोजा यहाँ। आधिपत्य अपना कर दिया बस में किया सारा जहाँ ॥

इस धरा पर उसमें है भरी ॥

अब मनुज की मनुज से आगे बढ़ने की होड़ है। प्रेम व्यवहार सब छोड़ करके स्वार्थ की दौड़ है ॥

धीरे – धीरे इंसान में राग – द्वेष होने लगा। अब तो बस इंसान ही इंसान का दुश्मन बना ॥

इस धरा पर उसमें है भरी ॥

मनुज तो ये समझ बैठा वही है ईश्वर यहाँ। बना डाले हैं जगत के विनाशक बम यहाँ ॥

भगवान भी इंसान के इस कृत्य से हैरान हैं। अब होगा क्या जगत का ये सोच के परेशान हैं ॥

इस धरा पर उसमें है भरी ॥

भगवान से आराधना है इस सृष्टि के वास्ते। इंसान को बस चला दो इंसानियत के रास्ते ॥

न समझें अब खुद खुद को किसी के वास्ते। इंसान बस इंसान बन जाए सभी के वास्ते ॥

इस धरा पर उसमें है भरी ॥



ऑडिट सप्ताह – 2022 का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए प्रधान महालेखाकार, श्री प्रवीन्द्र यादव।



ऑडिट सप्ताह – 2022 के दौरान आयोजित ऑडिट मेलों में विभिन्न व्यंजनों का लुप्त उठाते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



सतर्कता जागरूकता सप्ताह : 2022 के दौरान भ्रष्टाचार निवारण पर अपने विचार व्यक्त करते हुए पूर्व पुलिस महानिदेशक उत्तराखण्ड एवं आयुक्त सेवा का अधिकार, उत्तराखण्ड, देहरादून श्री अनिल रतूड़ी।



कार्यालय में कर्मचारियों को अनुवाद साफ्टवेयर (कंठस्थ – 2.0) का प्रशिक्षण प्रदान करते हुए कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, श्री दिलीप कुमार।



महालेखाकार प्रीमियम लीग, देहरादून के समापन समारोह में प्रथम स्थान के लिये चयनित श्री संदीप (लेखापरीक्षक) को ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित करते हुए श्रीमती नीता अग्रवाल, पत्नी, श्री योगेश अग्रवाल (वरिष्ठ उपमहालेखाकार)।



सी.ए.जी. के द्वारा आयोजित टेबल - टेनिस प्रतियोगिता उत्तर क्षेत्र में द्वितीय स्थान के लिये चयनित लेखापरीक्षक, श्री गौतम ध्रुवंश।



नयी दिल्ली में आयोजित सेंट्रल जोन प्रतियोगिता में दूसरे स्थान के लिये चयनित बैडमिन्टन प्रतियोगिता की विजेता टीम के साथ सहायक कोच के रूप में सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, श्री अरविन्द शर्मा। (दाहिने से प्रथम, द्वितीय पंक्ति में)



‘राजभाषा निरीक्षण प्रश्नावली’ विषय पर आयोजित कार्यशाला में अपना व्याख्यान देते हुए प्रबन्धक राजभाषा (सेवानिवृत्त), श्री महिमानन्द भट्ट।



उपमहालेखाकार श्री शिवम आशुतोष को उनके आई.पी.एस. में चयन के पश्चात् उनका तैलचित्र प्रदान कर सम्मानित करते कार्यालय के कर्मचारीगण।

सेवानिवृत्ति



वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, श्री राजेन्द्र कुमार जोगी को उनके सेवानिवृत्ति पर शॉल प्रदान कर सम्मानित करते हुए प्रधान महालेखाकार, श्री प्रवीन्द्र यादव।

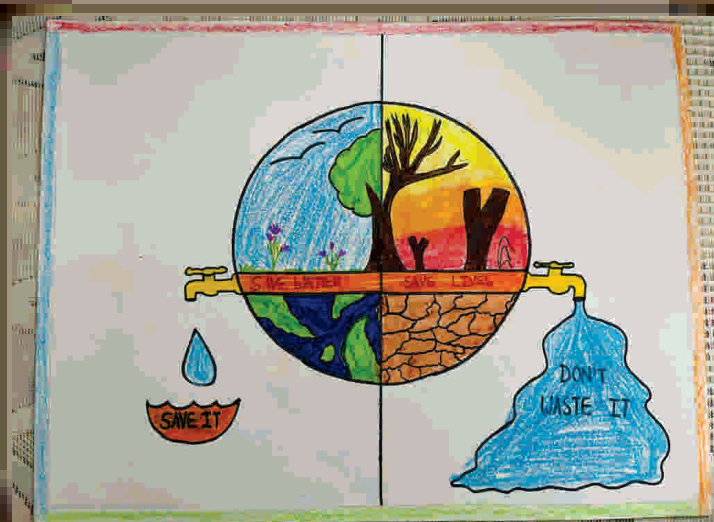


सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, श्री नरेश कुमार बंसल को उनके सेवानिवृत्ति पर गुलदस्ता प्रदान कर सम्मानित करते हुए सचिव, प्रधान महालेखाकार, श्री धर्मपाल सिंह।



वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, श्री राजेन्द्र कुमार जोगी को उनके सेवानिवृत्ति पर गुलदस्ता प्रदान कर सम्मानित करते हुए समस्त सह – अधिकारीगण।

ऑडिट सप्ताह नवम्बर - 2023 के अवसर पर
चित्रकला प्रतियोगिता में बाल प्रतिभागियों के
द्वारा बनाये गये कुछ चित्र।





SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

कौलागढ़, देहरादून – 248195

उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड में स्थित पर्यटन स्थल देवप्रयाग का मनमोहक दृश्य।